جون ۲۰۰۷ء

ماہنامہ

شعاع عمل

لکھنؤ

قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى

قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتَابٌ مُّبِيْنٌ

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب



مؤسسۂ نور ہدایت حسینیۂ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

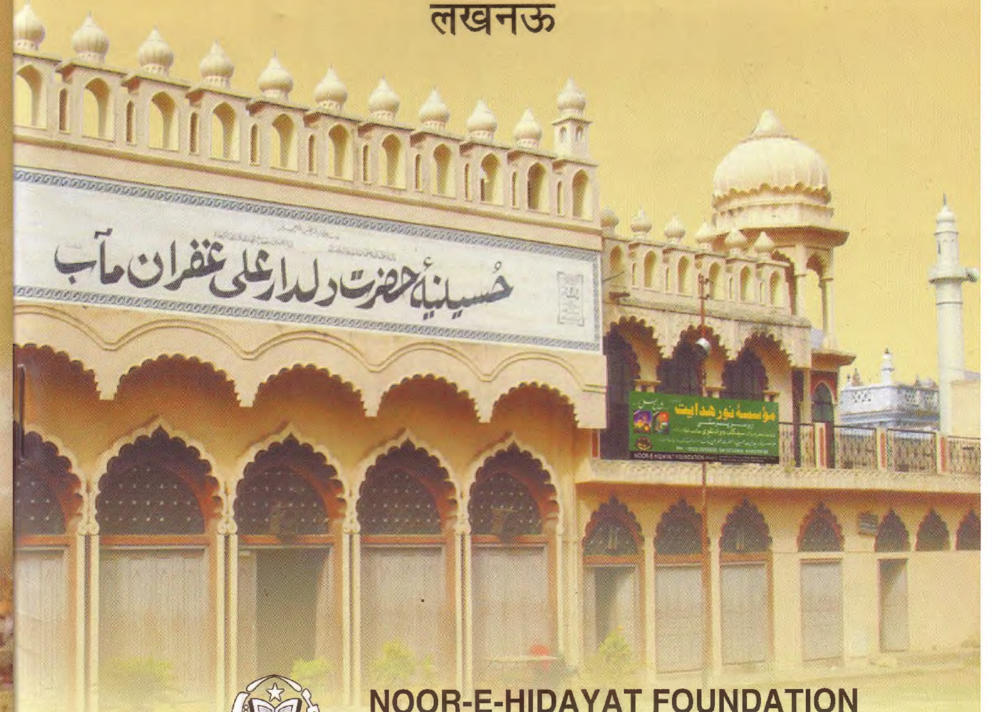
Lucknow

शुआ-ए-अमल

Jun 2007

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

लखनऊ





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk
LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA
Phone : 2252230

वर्ष–3

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक–12

माह जून – 2007 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
''लखनऊ''

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहिब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप–सम्पादक
हैदर अली

वार्षिक – 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत – 40 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

website: www.noorehidayat.com
e-mail: noorehidayat@noorehidayat.com

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

अक़्वाले इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0)

1– ख़ुदावन्दे आलम बेकार आदमी को पसन्द नहीं करता।

2– अपने ख़ुदा के अलावा किसी और से उम्मीद न रखो।

3– अपनी औलाद की इज़्ज़त करो और उनकी अच्छी परवरिश करो।

4– हसद करने वाला कभी इज़्ज़त नहीं पाता और जलने वाला अपने गुस्से से मरा करता है।

तिजारत के इस्लामी उसूल

इमादुल उलमा सै0 मुहम्मद रज़ी साहिब क़िब्ला मुजतहिद

तिजारत को किसी क़ौम की मआशी फलाह व कामियाबी में जो बुनियादी हैसियत हासिल है वह हर समझदार इन्सान जानता है। इस्लाम ने इस सिलसिले में ख़ास तौर पर हिदायात की हैं और मुसलमानों की तरक़्क़ी व मज़बूती, आज़ादी और आत्मनिर्भरता और ख़ुशहाली के लिये तिजारती कारोबार पर सख़्ती के साथ ज़ोर दिया है। एक हदीस का तर्जुमा हैः ''तिजारती कारोबार को न छोड़ो वरना तुम ज़लील व बेइज़्ज़त हो जाओगे। तिजारत करो अल्लाह तुम्हें बरकत अता फरमाएगा।'' दूसरी हदीस का तर्जुमा यह हैः ''जो शख़्स तिजारत को छोड़ देता है उसकी दो तिहाई अक़्ल चली जाती है। तिजारत न छोड़ो कि इससे अक़्ल घट जाती है। अपने घर वालों की रोज़ी के लिये तुम ख़ुद कोशिश करो और ऐसा न होने दो कि तुम ख़ुद तो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहो और वह लोग तुम्हारे लिये मेहनत और कोशिश करें। कुछ हदीसों में तिजारती कारोबार को ख़ुदा के रास्ते में जेहाद के बराबर बताया गया है। और कुछ में इसे नमाज़ के बाद फ़ज़ीलत का दर्जा दिया गया है। ग़रज़ तिजारत एक ऐसी चीज़ है जिसे इस्लाम ने मुसलमानों की इन्फ़ेरादी और इज्तेमाई ज़िन्दगी के लिए बहुत अहम हैसियत दी है। जिस वक़्त सरकारे दो आलम (स0) ने मक्का में इस्लाम की दावत देने की शुरुआत की थी उस वक़्त क़ुरैश की ज़िन्दगी का भी एक बड़ा सहारा तिजारती कारोबार ही था और वह बड़ी तादाद में गर्मी और जाड़े के मौसम में शाम और यमन के सफर किया करते थे। इस्लाम की दावत की शुरुआत और हिजरत के शुरु के दिनों में मुसलमान तरह–तरह की मुसीबतों में घिरे हुए थे इसलिए उन्हें इसका मौक़ा नहीं मिल सका कि वह तिजारती मैदान में आगे क़दम बढ़ा सकें। पूरा माहौल उनका दुश्मन था और ज़िन्दगी के तमाम रास्ते उनके लिये बन्द हो चुके थे लेकिन कुछ ज़माने के बाद जब सरवरे काएनात (स0) की अज़ीम सरदारी की बदौलत उन्हें ताक़त मिलने लगी और उनके जमने और कामियाबी की सूरतें उभरने लगीं तो उनको रसूले अरबी (स0) ने तिजारती कारोबार की तन्ज़ीम का और उसे आगे बढ़ाने का सख़्ती के साथ हुक्म दिया और इस हक़ीक़त से आगाह फरमाया कि तिजारती कारोबार में कामियाबी हासिल किये बिना उन्हें एक आत्मनिर्भर और शानदार ज़िन्दगी नहीं मिल सकती और यह कि जो क़ौमें तिजारत की दुनिया में कोई इज़्ज़त की जगह नहीं रखतीं वह हमेशा ज़लील और दूसरों की गुलाम रहा करती हैं लेकिन साथ ही इस्लाम ने तिजारती कारोबार के लिये ऐसे उसूल और क़ानून बना दिये हैं जिनके हिसाब से काम करने से कभी वह इन्फेरादी और इज्तेमाई ख़राबियाँ नहीं पैदा हो सकतीं जो इन क़ानूनों से बे परवाह और आज़ाद रह कर पैदा हो सकती हैं।

इन बुनियादी क़ानूनों और उसूलों के सिलसिले में कुछ आयतों और हदीसों को सामने रखना बिलकुल काफी होगा। सूर–ए–निसा आयत–29 में अल्लाह का इरशाद हैः ऐ ईमान वालो आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ तरीक़े पर न खाओ हाँ अलबत्ता अगर आपसी रज़ामन्दी से कोई तिजारती मामला हो तो कोई बुराई नहीं है।

दूसरी एक और आयत (275) सूर–ए–बक़रा की है जिसके एक हिस्से में फरमाया गया हैः अल्लाह ने बैअ को हलाल किया है और सूद को हराम कर दिया है।

इन आयतों से तिजारत का यह इस्लामी ख़याल साफ हो गया कि इसमें कोई एक दूसरे को किसी तरह का भी धोखा न दे और उससे नाजाएज़ फायदा उठाने की कोशिश न करे और जो कारोबार भी हो पूरी दयानतदारी और आपसी रज़ामन्दी से हो इस तरह फरेब देने, मिलावट, ऐब छुपाने और इसी तरह की दूसरी बातों से तिजारती कारोबार हमेशा के लिये महफ़ूज़ रह सकता है, एक शख़्स दूसरे पर जो भरोसा रखता है इसमें कोई फ़र्क न होगा, तिजारत की साख क़ायम रहेगी और बेएतेबारी या शक व शुबह से जो नुक़सान तिजारती मुआमलात को पहुँच सकता है वह नहीं पहुँचेगा। क्योंकि तिजारती पेशे में दयानतदारी की साख क़ायम हो जाना उसकी कामियाबी के लिए बहुत बड़ी ज़मानत है।

हज़रत इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) ने अपनी एक हदीस में फरमाया था जिसका तर्जुमा यह है किः ''अपनी ज़बान बातचीत में सच्ची रखो और माल में जो कमी हो उसे कभी न छुपाओ। जो शख़्स तुम पर भरोसा रखता है इसे नुक़सान पहुँचाने की कोशिश न करो यानी हर एक के साथ पूरी सच्चाई के साथ मुआमला करो और दूसरे लोगों के लिये भी वही अच्छी और जायज़ बात पसन्द करो जो तुम ख़ुद अपने लिये पसन्द करते हो। हक़ दो और हक़ लो। न डरो न ख़यानत करो, बेशक सच्चा और दयानतदार ताजिर क़यामत में फरिश्तों के साथ होगा। क़समें खाने से परहेज़ किया करो क्योंकि झूठी क़समें, क़सम खाने वाले को जहन्नम का मुस्तहक बना देती हैं। यक़ीनन वही ताजिर तारीफ के क़ाबिल है जो हक़ दे और हक़ ले।''

कुर्आने हकीम ने बहुत सी जगहों पर नाप–तौल में कमी करने वालों की सख़्त बुराई की है और उस पर तबाही और अज़ाब का एलान किया है और यूँ भी यह काम हराम मामलात के उसूल में शामिल है जिसको अल्लाह ने मना किया है और उस आपसी रज़ामन्दी के इस्लामी उसूल के भी ख़िलाफ है जो बेचने वाले और गाहक के बीच ज़रूरी है। ग़रज़ इस्लाम ने जहाँ तिजारत को मुसलमानों की ज़िन्दगी और इन्फेरादी व इज्तेमाओ फलाह व कामियाबी, वक़ार व इज़्ज़त और तरक़्क़ी व मज़बूती को अहमतरीन ज़रिया बताया है साथ ही कुर्आन व हदीस के ज़रियेसे इसकी कुछ हदों से भी आगाह कर दिया है। इनमें सबसे ज़्यादा नुमायाँ वह हदें और वह पाबन्दियाँ हैं जो तकलीफ पहुँचाने और इस्तेहसाल से रोकने के लिये हैं जैसे धोका, ग़लत बयानी, महंगाई, अपने माल की हद से बढ़कर तारीफ करना जिसमें हद से ज़्यादा इश्तेहार क़तई तौर पर दाख़िल है। ख़राब माल को अच्छा बताकर पेश करना, क़ीमत के तै करने के बारे में झूठ से काम लेना। ख़रीदार को तरह–तरह से इसका शौक़ दिलाना और ऐसी तरकीबें करना कि वह माल की ज़्यादा क़ीमत देने पर आमादा हो जाए। माल को महंगा बेचने के लिये जमा करना जिसे शरीई ज़बान में ''एहतेकार'' कहते हैं या किसी और तरीक़े से चीज़ों की क़ीमतों में बनावटी महंगाई पैदा करने की कोशिश करना। इस्लाम ने इसकी तालीम दी है कि बेचने वाले के लिये यह बात ज़रूरी है कि अगर उसके माल में कोई बुराई है तो उस से ख़रीदार को पूरी तरह बाख़बर करे इसी तरह ख़रीदार की मजबूरी से फायदा उठाकर उससे ज़्यादा दाम वुसूल कर लेना भी उन तमाम ग़लत तरीक़ों में शामिल है जिनको किताब व सुन्नत में साफ तौर पर बयान किया गया है और इस तरह का तिजारती मुआमला क़तई तौर पर नाजायज़ और फासिद होगा।

मजबूरी की हालत से मुराद यह है कि ज़रूरत से मजबूर होकर कोई अपना माल बेच रहा हो या कोई ज़रूरतमन्द शख़्स किसी माल को ख़रीद रहा हो। इस तरह "मुज़तर" जिसे हम दूसरी लफ़्ज़ों में सख़्त ज़रूरतमन्द कहते हैं। बेचने

वाला और ख़रीदने वाला दोनों ही हो सकते हैं। आम तौर पर लोग ऐसे मौक़ों से नाजायज़ फायदा उठा लेते हैं। शरीअते इस्लाम ने लोगों को इस इन्सानी जुर्म से सख़्ती के साथ रोका है। एक हदीस में फरमाया गया है कि ऐसे लोग बदतरीन इन्सान हैं जो किसी की परेशान हाली से इस तरह का फायदा हासिल करें। ख़ुलासा यह हुआ कि इस्लाम ने इस तरह की तिजारती कारोबार की इजाज़त दी है जिसमें पूरी दयानतदारी से काम लिया जाए। जिसमें आपस की भरपूर रिज़ामन्दी हासिल हो। धोका और फरेब किसी शक्ल और किसी तरीक़े पर भी न हो, बदनियती, इस्तेहसाल और तकलीफ पहुँचाने का कोई रुख़ मौजूद न हो, किसी शख़्स की परेशानी और मजबूरी की हालत और घबराहट या मुसीबत से फायदा हासिल करने की कोशिश न हो। वादा ख़िलाफी, ग़लत बात कहना और बुरा मुआमला करने से क़तई तौर पर काम न लिया जाए। लिखा पढ़ी और तमाम मुआमलात सही तौर पर किये जाएँ। अपने माल की बढ़ाचढ़ाकर तारीफ़ करके या किसी दूसरे तरीक़े से ख़रीदार को फाँसने की कोशिश न की जाए, तिजारत के माल की सही और असली हालत से ख़रीदार को आगाह किया जाए और साथ ही उन चीज़ों और उन तरीक़ों से तिजारत की जाए, जिनसे तिजारत करना इस्लाम ने जाएज़ क़रार दिया है और उन्हें ग़लत और हराम नहीं किया है। फिर तिजारत का मक़सद अपनी अकेले की ख़ुशहाली के साथ–साथ सबकी कामियाबी और ख़ुशहाली भी हो यानी तिजारत की ग़रज़ यह न हो कि कुछ लोग दौलत व मालदारी के तमाम रास्तों और नतीजों पर क़ब्ज़ा करके बैठ जाएँ और दूसरे लोग उनके भिखारी बन जाएँ बल्कि मेहनत करने वालों को उनका पूरा–पूरा हक़ मिले और माल पूरे समाज में फिरता रहे ताकि माल लगाने वाले और मेहनत करने वाले सबके सब मिल कर पूरी क़ौम को ख़ुशहाल बना सकें।

जिस तिजारत में हक़ पाने और पहचानने का वजूद न हो और जिसकी बुनियाद ज़ुल्म, नुक़सान, नफ्स परवरी, ऐश परस्ती, ख़ुदग़रज़ी, मफादपरस्ती और मौक़ा परस्ती और दूसरों के इस्तेहसाल पर हो वह तिजारत बिलकुल ग़ैर इस्लामी है और बेशक वह इन्सानी नस्ल के लिये तबाही और बर्बादी का एक ख़ौफनाक पैग़ाम साबित होगी।

माल व दौलत अल्लाह की अमानत है

अल्लाह ने जगह–जगह क़ुर्आन हकीम में फरमाया है कि जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है वह सब का सब उसी की मिलकियत है। सूर–ए–'हदीद' में अल्लाह का इरशाद हैः ''आसमानों और ज़मीन में उसी की सलतनत है'' सूरा–ए–'शूरा' में फरमाता हैः ''उसी अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है''। फिर सूरा–ए–'ज़ुख़रुफ' में फरमाया गया है ''वह ज़ात बड़ी आलीशान है जिसके लिये आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दरमियान है सबकी हुकूमत है'' फिर सूरा–ए–'नज्म' में फरमाता हैः और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है।'' यहाँ अल्लाह ने जो कुछ फरमाया है उससे साफ ज़ाहिर होता है कि हम माल व दौलत के असली मालिक नहीं हैं बल्कि इसके अमानतदार हैं। और हमें अल्लाह की मर्ज़ी और हुक्म के ख़िलाफ एक पैसा भी न ख़र्च करना चाहिए और इसी तरह सारे ख़र्चे पर कड़ी नज़र रखना चाहिए जिस तरह एक बहुत ही दयानतदार और अमानतदार शख़्स किसी की अमानत को बेजा और ग़लत तरीक़े से ख़र्च करने से बचता है। चुनानचे इसी सूरा–ए–'नज्म' में फिर फरमाया गया हैः ''यह जो कुछ माल व दौलत अल्लाह ने

इन्सानों को दिया है उसकी ग़रज़ यह है कि वह उन लोगों को सज़ा दे जो इसका ग़लत इस्तेमाल करते हैं और उन लोगों को सवाब दे जो इसका सही इस्तेमाल करते हैं।

सूरा 'हदीद' में एक जगह अल्लाह का इरशाद है जिसका तर्जुमा यह हैः ''अल्लाह और उसके रसूल (स0) पर सच्चे दिल से ईमान लाओ और अपने माल व दौलत में से जिसमें तुमको उसने अपना नाएब बनाया है उसके रास्ते में ख़र्च करो।'' इन तमाम बातों से यह नतीजा निकला है कि हम जिस माल व दौलत को अपना कहते हैं वह हक़ीक़त में हमारा नहीं है बल्कि अल्लाह का है और हम सिर्फ एक अमीन और नाएब की हैसियत रखते हैं इसलिए हमें अल्लाह की इस अमानत को उसी तरह ख़र्च करना चाहिए जिस तरह उसकी मर्ज़ी हो वरना यह ख़यानत होगी और हमें इसकी सज़ा मिलेगी। इस बात को हम इस तरह भी देख सकते हैं कि ज़मीन व आसमान की जितनी चीज़ें हैं वह सब अल्लाह की पैदा की हुई हैं और उन्हीं से हम अपने लिये हर तरह के फायदे हासिल करते हैं और उन्हीं को हम अपना माल व दौलत समझते हैं तो जब हम यह देखेंगे कि जो चीज़ें हमारे क़ब्ज़े में हैं चाहे वह ज़मीन हो, पानी हो, आग हो या कोई और चीज़ हो इनमें से कोई चीज़ भी हमने नहीं बनाई बल्कि वह सब अल्लाह ही की बनायी हुई हैं तो हम पूरी तरह समझ जाएँगे कि न तो हमारे जिस्म के हिस्से हमारे हैं, और न हमारा जिस्म हमारा है और न वह चीज़ें हमारी हैं जो हमारे क़ब्ज़े और इस्तेमाल में हैं बल्कि हम और हमारी हर चीज़ अल्लाह ही की बनाई हुई है तो ऐसी सूरत में लाज़मी तौर पर हम अपने हर अमल में हर काम में और हर इस्तेमाल और हर ख़र्च में एक ख़ज़ान्ची, नौकर और अमानतदार की तरह अल्लाह की बारगाह में जवाब देने वाले होंगे। आपने बार–बार देखा होगा कि जब कोई शख़्स अपने नौकर को कुछ रक़म देता है ताकि वह बाज़ार से कुछ सौदा वग़ैरा ले आए और जब वह नौकर उसकी मंगाई हुई चीज़ें लाता है तो वह किस तरह उस से एक–एक चीज़ का हिसाब माँगता है फिर वह यह भी देखता है कि इस नौकर ने सौदा लाने में वक़्त कितना लगाया। ग़रज़ किसी अमानत को ख़र्च करने में इन्सान पर बड़ी ज़िम्मेदारी होती है बस इसी तरह हर शख़्स को अपनी ज़िम्मेदारी अल्लाह की बारगाह के सामने भी समझना चाहिए बल्कि इस ज़िम्मेदारी की अहमियत तो सबसे ज़्यादा है। एक नौकर और मुलाज़िम के पास जो अमानत है वह उसके बनाए हुए मालिक की होती है और ख़ुद हर इन्सान के पास जो कुछ भी है वह उसके हक़ीक़ी मालिक और आक़ा अल्लाह की मिलकियत है और फिर ऐसा मालिक जो इन्सान के हर छुपे हुए और हर ज़ाहिर काम की पूरी ख़बर रखता है और कोई राज़ भी उसकी ज़ात से छुपा नहीं रखा जा सकता जबकि बनाए गये मालिक की नज़र से बहुत सी बातें उसके नौकर की छुपी रहती हैं और वह इन बातों को नहीं जानता। ख़ुलासा यह हुआ कि हम माल व दौलत के अमानतदार हैं और हमारा फ़र्ज़ है कि हम इस बात को बड़ी गहरी निगाह से देखते रहें कि हमारे पास जो माल आया है वह हराम रास्तों से न हों। और जिन बातों में हम इस माल को ख़र्च करें वह भी अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ न हों अगर हम अपने माल को ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ ख़र्च करेंगे तो अस्ल में हम अल्लाह के माल में ख़यानत करेंगे और ऐसे लोगों के लिए ख़ुदा फरमाता हैः यानी ''अल्लाह किसी ख़यानत करने वाले, शुक्र अदा न करने वाले को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता।''

ग़रज़ कि सच्चा मुसलमान वही है जो अपनी दौलत ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ न इकटठा करे और न ख़र्च करे।



एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

इन परिस्थितियों में धर्म की शिक्षाओं और उसकी ओर आवाहन की अधिक आवश्यकता है। यह धर्म और मात्र धर्म है जो विनाश और भंवर की ओर तेज़ी से बढ़ती हुई मानवता की नौका को बचा के मुक्ति के घाट तक पहुँचा सकता है। मात्र ईश्वरीय भय है, जो उसको तबाही फैलाने वाले (घातक) हथियारों के बेजा इस्तेमाल से रोक सकता है। अगर मज़हब रुकावट नहीं बनेगा तो पता नहीं कितने और शहर 'नागा साकी' और 'हीरोशिमा' की तरह एटम और हाइड्रोजन बमों का शिकार होते रहेंगे। और न जाने कितने 'वियतनाम' साम्राजी शासकों का निशाना बनेंगे। लेबनान, इस्राइली हथियारों और अफ़गानिस्तान, रूस की विनाशकारियों का शिकार होता रहेगा। और हो सकता है कि कभी कोई बिफरा हुआ सरफिरा डिक्टेटर किसी बहादुर राष्ट्र को तोपों, टैंकों और राकिटों के सामने अपना सर न झुकाते देखकर या साधारण हथियारों में अपने को कमज़ोर पाके पराजय के ख़तरे से बचने के लिये एटमी लड़ाई शुरु कर दे और धरती भाप बन के वातावरण में बिखर जाये।

यानी यह तो सम्भव है कि इंसान भौतिक उपायों से अन्तरिक्ष पर विजय पा ले। सुदूरतम नक्षत्रों से सम्पर्क साध ले। लेकिन ईश्वर से नाता जोड़े बिना अपने मन (नफ़्स) पर विजय पाना, भावनाओं को क़ाबू में लाना, त्याग बलिदान और मानवीय सहानुभूति के भाव पैदा करना सम्भव नहीं। मानव प्रगति द्वारा अतिघातक पशु बन सकता है परन्तु अशरफुल मख़लूक़ात (श्रेष्ठतम सृष्टि) नहीं बन सकता।

एक पहलू से और भी विचार किया जा सकता है और वह यह है कि इंसान के प्रत्येक कार्य का प्रेरक उसका अपने निज का लाभ होता है। वह हर काम में क़दम उठाते समय यही सोचता है कि मुझे क्या हासिल होगा! वह कभी वीरता इस लिये दिखाता है कि अपनी बहादुरी का सिक्का जमाये। कभी धन ग़रीबों में इसलिये बाँटता है कि दानवीर कहलाये। कभी पीड़ितों का सहायक इसलिए बनता है कि लोग उसे जनता का हमदर्द समझें। ऐसे अवसरों पर जब देखने में कोई स्वार्थ सिद्ध होता नहीं दिखाई पड़ता लेकिन गहराई से देखने में थाह लग जाती है कि किस–किस ढंग से उद्देश्य अपनी ही भलाई या स्वार्थ है।

ऐसे अवसर भी आ सकते हैं कि उसके दम से उसके घर वालों परिवार वालों का, कोई फ़ायदा न हो बल्कि सरसरी निगाह से घाटा ही घाटा दिखाई देता हो। कोई प्रशंसक न हो, कोई उत्साह बढ़ाने वाला न हो। ऐसे समय में अच्छाई की प्रेरक और नेकी की तरफ दे जाने वाली यह

कल्पना हो सकती है कि कोई मनुष्य भले ही न देख रहा हो परन्तु वह तो देख रहा है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सबका जानने वाला है। कोई बदला दे न दे वह तो मौजूद है जो पुकार–पुकार कर कह रहा है, ''जो कुछ अपने लिये पहले से भेज दोगे वह अल्लाह के पास सुरक्षित मिलेगा।''

धर्म की आवश्यकता पर पहले भी प्रकाश डाला जा चुका है। धर्म को ज़िन्दगी से हटा देने का नतीजा मन की ग्रंथियों, तान्त्रिकों के रोगों और अनेक प्रकार की प्रतिक्रियाओं के रूप में धर्म की आवश्यकता और पैग़म्बरों की शिक्षाओं पर चलने को आवश्यक और प्रकृति की माँग ठहराता है।

''वह्य'' अथवा रहस्यात्मक संकेत

अल्लाह द्वारा नियुक्त पैग़म्बरो की ज़रूरत इसीलिये तो है कि वह फ़ितरत के मुताबिक़, प्रकृति के अनुसार ऐसी विधियाँ सिखायें जो प्रकृति के विधाता ईश्वर ने मनुष्य की भौतिक, आध्यात्मिक और द्रन्द्रियों सम्बन्धी आवश्यकताओं का ध्यान रख के उसके लिये बनाई हैं। इन विधियों का ज्ञान सामान्य जन को तो पैग़म्बर के माध्यम से होगा लेकिन पैग़म्बर को क्योंकर ज्ञान होगा। इस विशेष सम्पर्क सूत्र को, जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर के बीच होता है जो दूसरें लोगों को उपलब्ध नहीं, जिसके द्वारा ईश्वर का संदेश पैग़म्बर प्राप्त करता है और फिर दूसरों तक पहुँचाता है ''वह्य'' कहते हैं।

पैग़म्बरी के इन्हीं दोनो पक्षों यानी ईश्वर से पाने और उसके बन्दों तक पहुँचाने की क्षमता की ओर कुर्आन की आयत में इशारा है, ''मैं तुम्हारे ऐसा इन्सान हूँ (अतएव तुम से सम्पर्क है कि सन्देश पहुँचा सकूँ) और मुझ पर अल्लाह की वही आती है (यही वह सन्देश है जो तुमको देना है)।

''वह्य'' के माने अरबी में हैं गुप्त रूप से बात करना, इशारों और संकेतों से किसी तथ्य को प्रकट करना जैसे सम्बन्धित व्यक्ति के अलावा कोई दूसरा न समझ सके। कुर्आन मजीद में ''वह्य'' शब्द का प्रयोग विभिन्न अवसरों पर हुआ है। शैतान द्वारा भ्रमित किये जाने के लिये भी यह शब्द प्रयोग किया गया है ''शैतान अपने दोस्तों के दिलों में (बुराईयों के) भाव उभारते हैं।

ईश्वर की तरफ से कोई भी बात ह्रदय में आ जाने के लिये भी यही शब्द आया है। जैसे ''हमने (जनाब) मूसा की माँ के दिल में यह बात डाली कि मूसा को दूध पिलाती रहें। और जब उनके बारे में भय हो तो नदी की लहरों को सौंप दें।'' प्रकृति के संकेत के लिये भी इसका इस्तेमाल किया गया है जैसे मधुमक्खी के लिये कहा गया है कि, मधुमक्खियों की ओर अल्लाह ने ''वह्य'' की। यअ्नी उनके स्वभाव में यह बात ठहरा दी कि वह अपने छत्ते पहाड़ों, पेड़ों और मानव निर्मित ऊँची इमारतों में बनायें। इन सभी अवसरों पर वह्य शब्द का इस्तेमाल पोशीदा इशारे (गुप्त संकेत) अर्थात् शाब्दिक अर्थ में हुआ है। चाहे यह संकेत शैतान की ओर से हुआ हो चाहे अल्लाह या प्राकृति की ओर से हुआ हो, मगर वह्य का परिभाषित अर्थ उस सम्पर्क सूत्र का है, जिसके द्वारा ईश्वर अपनी मर्ज़ी पैग़म्बरों के लिये व्यक्त करता है, इस ढंग से कि उसको ईश्वरीय सन्देश समझने में इन पैग़म्बरों को ज़रा सा भी शक न हो और किसी भी गलती की गुंजाइश न रहे।

(जारी)

इमामे सज्जाद (अ०) की समाजी शख़्सियत

मौलाना सै0 एहसान हैदर रिज़वी साहब

हालात व इक़दामात

तारीख़े इस्लाम की क़यादत में इमाम सज्जाद अलैहिस्सलाम के किरदार के ज़िक्र से पहले ज़रूरी है कि यह बात फिर से दुहरा दी जाए कि अइम्म–ए–अहलेबैत (अ0) में से हर इमाम अपने ज़माने की इस्लामी उम्मत की इन्फेरादी, समाजी, फिक्री और सियासी क़यादत के लिये इन ख़ुतूत को तय करता है जिन पर इस्लामी उम्मत की इस्लाह व कामियाबी पूरी तरह मुमकिन हो, क्योंकि इमाम के लिये मुमकिन नहीं है कि वह उम्मतसे बे ताल्लुक़ और उनके समाजी हालात से नज़र चुराए, बल्कि वह हमेशा अपने ज़माने के हालात पर नज़र रखते हुए उम्मत के लिये सियासी और ग़ैर सियासी तरीक़े को चुनता है। और यही वजह है कि हम इमामों के इक़दामात में इख़्तेलाफ पाते हैं और उनकी इस्लाही हिक्मत में फर्क़ नज़र आता है कि हर इमाम अपना ख़ास रास्ता, नज़रिया और तरीक़ा इस्तेमाल करता है बल्कि एक ही इमाम अपनी ज़िन्दगी के कई हिस्सों में इस्लामी उम्मत के बदलते हुए समाजी और सियासी हालात को देखते हुए कई तरीक़े और रास्ते चुनता है। जैसा कि हमें अली बिन अबी तालिब (अ0) और आपके बेटे हसन (अ0) व हुसैन (अ0) और उनके बाद इमाम अली बिन हुसैन (अ0) की ज़िन्दगियों में नज़र आता है जिनको अब हम बयान करेंगे।

इमाम अली बिन अबी तालिब (अ0) अपनी इस्लाही क़यादत के ज़माने में तीन दौरों से गुज़रे। आपका पहला दौर रसूल (स0) की ज़िन्दगी में गुज़रा जब आप एक ऊँचे दर्जे के मानने वाले और फरमाबरदार सिपाही की हैसियत से कभी मैदाने जंग में जाते और कभी पैग़ाम पहुँचाने के दूसरे फ़र्ज़ अन्जाम दे रहे थे।

आपका दूसरा दौर उन तीन ख़लीफाओं के ज़माने में जो तारीख़ी एतेबार से उम्मत के ख़ुद से सरदार बन गये थे। उस ज़माने में आप (अ0) की सारी कोशिश हक़ीक़ी इस्लाम की हिफाज़त, इस्लामी सियासत को फैलाने और उम्मत के इज्तेमाई रास्तों को बनाने में ख़र्च हो रही थी। इसलिए इसी ज़माने में आपने क़ुर्आन करीम इकटठा किया, हुक्काम को रास्ता दिखाया, हद से आगे जाने वालों को समझाया और फिर जाने वालों को नसीहत और हक़ व हक़ीक़त की हिदायत फरमाई।

लेकिन जैसे ही इस्लामी उम्मत की क़यादत आपके हाथों में आई अब आपकी सारी पालीसियाँ बिलकुल बदल गईं और आपने उम्मत की क़यादत का नया रास्ता ईजाद किया और वह सारी बुरी और ख़राब बातें जो हुकमरानों ने इस्लाम में पैदा कर दी थीं उन सबको आपने बिलकुल बातिल कर दिया। और इस्लाम की हक़ीक़ी ज़रूरतों के हिसाब से और इस्लामी उम्मत के हक़ीक़ी सुधार को देखते हुए अपने सारे हुकूमती और कारोबारी प्रोग्राम नई तरह से तरतीब दिये।

इमाम अली (अ0) की तरह बड़े नवासे इमाम हसन (अ0) ने भी अपने अब्बा जान के ज़माने की पालीसियों को अपने ज़माने के हालात के एतेबार से बदला और उस ज़माने की पालीसियों को अपने ज़माने के हालात के एतेबार से बदला और उस वक़्त जब आपने बनी उमैय्या के गिरोह को मज़बूत पाया और उनके इक़दामों में हद से आगे बढ़ जाने का जायज़ा लिया तो आपने भी शुरु में अपनी पालीसी बदल दी लेकिन बाद के मौक़ों में हालात के एतेबार से आपने अपना पहला तरीक़ा भी बदला (वसीक़तुलहुदना के बाद....)

यहीं से हम देखते हैं कि हर इमाम अवाम और आम हालात को सुधारने के लिये अपना किरदार अदा करता है। और इसी से इस बात का अन्दाज़ा होता है कि इमाम सज्जाद (अ0) ने इस्लामी उम्मत की रफ्तार को सिर्फ इसलिए नहीं मोड़ा था कि उन्हें उम्मत की क़यादत के लिए जो कुछ भी कर गुज़रना पड़ता वह उन्होंने किया। बल्कि आप ने मौजूदा हालात में मुस्लिम उम्मत के लिये सही और सबसे अच्छा इस्लामी व इस्लाही रास्ता चुना जिसकी बुनियाद इस्लामी अहकाम पर पड़ी थीं।

यहाँ इस बात को भी बढ़ा दिया जाए कि जिन लोगों ने अइम्मा अलैहिमुस्सलाम की इन बड़ी फिक्री ख़ूबियों की बिना पर तय किये हुए रास्तों से हालात व वाक़ेआत की वजह से इस्लाह क़बूल न की बल्कि उनसे अलग रहे उनमें ज़्यादातर ने खुली हुई ग़लती की (और इमाम की इस बड़ी फिक्र को न समझ सके) यहाँ तक वह इमाम हसन (अ0) से भी इमाम हुसैन (अ0) की तरह जंग का सवाल करते हैं, और इमाम हुसैन (अ0) से इसके उलट सुलह का सवाल करते हैं।

अइम्म–ए–मासूमीन (अ0) की सीरत में बेशुमार ऐसी दलीलें मौजूद हैं जो इन बातों को साफ करती हैं कि इस्लमी उम्मत की इस्लाही क़यादत में, उनके काम के तरीक़ों में इख़्तेलाफ की क्या वजहें थीं, (और किन हालात ने उनके इक़दामात में फर्क़ पैदा किया) इमाम हसन (अ0) ने भी बार–बार इस बात को साफ किया है कि इन हालात में मुआविया से सुल्ह करना ही सही इस्लामी रास्ता और तरीक़ा था और इसके अलावा कोई भी दूसरा तरीक़ा समझ में आने वाला नहीं था। जैसा कि आपने फरमाया ''ऐ अबु सईद! मुआविया से मेरी सुलह की बिलकुल वही वजह है जो रसूल (स0) का बनी ज़ुमरा और बनी अश्जअ् से सुलह की वजह थी और बिलकुल वही वजह थी जो रसूल (स0) का मक्के वालों से हुदैबिया से पलटने के मौक़े पर सुल्ह की वजह थी'' और जैसा कि आपने बशीर हमदानी से फरमायाः ''मेरा मक़सद इस सुलह से सिर्फ यह था कि तुम लोगों को क़त्ल होने से बचाऊँ''।

और इमाम हुसैन ने अपने फ़ातेहाना क़याम की पहचान भी अपने ज़ाती इक़दाम से नहीं की थी बल्कि फरमायाः ''मुझे ख़ुदा क़त्ल किया हुआ देखना चाहता है'' यानी आप साफ कर रहे थे कि मैंने इन्हेराफों के मुक़ाबले में यह क़याम जिसमें मेरी शहादत हुई है अपने ज़ाती इक़दाम और अपनी शख़्सी फ़िक्र की बुनियाद पर नहीं की बल्कि यह सिर्फ ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ था जिसे मैंने अन्जाम दिया है।

और इमाम सज्जाद अली बिन हुसैन (अ0) से जब इबाद अलबसरी ने मक्का के रास्ते में कहाः आपने जिहाद और उसकी सख़्तियों को छोड़ दिया और हज और उसकी आसानियों के लिये जा रहे हैं जबकि ''अल्लाह मोमिनों से उनकी जानों और मालों को ख़रीद लेता है''। तो

(शेष..........पृष्ठ 14 पर)

मासूम-ए-कौनैन (स0) की अमली ज़िन्दगी

मोहतरमा निसार फ़ातिमा साहिबा

ऐसे दौर में जब कि एतेक़ादी बातें तिरछी निगाहों से देखी जाती हैं और उसके इस नुक्ते पर गहरी निगाह नहीं डाली जाती कि इस अक़ीदे के पीछे क्या कामियाबी छुपी हुई है। जनाब मासूमा (स0) की पैदाईश और शादी के बारे में तफसीली वाक़ेआत बयान करना तो शायद खुश एतेक़ादी और मज़हब परस्ती पर लाद दिया जायेगा।

इसलिए मैं अपनी बहनों के सामने मासूम–ए–कौनैन (स0) की अमली ज़िन्दगी के कुछ वाक़ेआत पेश करना चाहती हूँ लेकिन इससे पहले यह ज़हन में रखना ज़रूरी है कि जनाब मासूमा सलामुल्लाहि अलैहा की उम्रे मुबारक सिर्फ पाँच साल की थी कि आपकी माँ जनाब ख़दीजतुल कुबरा का इन्तेक़ाल हो गया और आपकी सारी की सारी परवरिश सरदारे दो जहाँ के साये में हुई। अब चाहे आँहज़रत (स0) ने ज़िन्दगी के हर हिस्से की तालीम व तरबियत अमल से की हो या बताकर और नसीहत देकर। लेकिन यह मानना पड़ेगा कि औरत की तालीम व तरबियत का मसअला एक मर्द के हाथ से अन्जाम पाकर दुनिया की औरतों के लिये हर पहलू से (दीनी हो या दुनियावी) नमून–ए–अमल बन जाना अगर इसे करिश्मा नहीं कहा जा सकता तो ताज्जुब वाला इस माने में ज़रूर है कि आज तक कोई मिसाल दुनिया में ऐसी नहीं मिलती कि सिर्फ बाप की तालीम व तरबियत से बेटी ऐसी अच्छी ख़ूबियों और अच्छे कामों वाली हो गई हो।

मेरी इज़्ज़तदार बहनों! अपनी जगह पर जब आप ग़ौर करेंगी तो मालूम होगा कि औरत के लिये शौहर के घर जाकर सबसे बड़ा फ़र्ज़ जो उसके ज़िम्मे होता है वह शौहर की इताअत और शौहर का हुक्म मानना है। इसमें मासूम–ए–कौनैन अपनी मिसाल आप ही हो गईं। अल्लाह! अल्लाह!! किस औरत का हौसला ऐसा है कि वह पूरी ज़िन्दगी अपने शौहर से किसी तरह की फरमाइश इस ख़याल से न करे कि शायद मेरा शौहद मजबूर हो तो उसे शर्मिन्दा होना पड़े। मुझे तो मासूमा (स0) की ज़िन्दगी में कोई मौक़ा इसके अलावा नज़र नही आता कि एक बार बीमारी के मौक़े पर शौहर के बार–बार कहने पर अनार की ख़्वाहिश कर दी थी ताकि दुनिया आगे चलकर इन वाक़ेआत से कहीं यह नतीजा न निकाल बैठे कि ख़ुदा की पनाह रसूल (स0) की बेटी के मिज़ाज में घमण्ड था वरना अली बिन अबी तालिब अलैहिस्सलाम जैसे शौहर के बार–बार कहने पर फरमाइश न करना क्या मतलब?

इसके अलावा मुहब्बत व ख़िदमत व वफादारी का ताल्लुक़ जहाँ तक था उसकी कैफ़ियत को कोई बाबुल इल्म से पूछे तो मालूम हो कि वफात के बाद आपको वह सुकून व इत्मिनान नसीब न हुआ जो जनाबे सैय्यदा (स0)

की ज़िन्दगी में हासिल था। ख़ुद जनाबे अमीर (अ0) के वह अलफाज़ जो वफात के बाद मुबारक ज़हन से निकले आज तक दलील हैं। अब इससे ज़्यादा और क्या सुबूत होगा।

दूसरा अहम फ़र्ज़ औलाद की तालीम व तरबियत का औरत के ज़िम्मे होता है जिसे औलाद से इतनी मुहब्बत व उलफत होने के बावजूद कि अगर मस्जिदे नबवी से आने में ज़रा सी देर हुई या कोई बच्चा रसूल (स0) की मस्जिद से रोता हुआ आया तो आपने चादरे इस्मत व तहारत ओढ़ ली, मोज़े पहन लिये जिसके बारे में कई वाक़ेआत तारीख़ और सीरत की किताबों में लिखे हैं और जानकार लोग इनको ख़ूब जानते हैं फिर भी तालीम व तरबियत का उनवान कितना अच्छा और आसान था कि जब बच्चे मस्जिद नबवी से इलाही अहकाम और रिसालत के हुक्म रसूल (स0) की ज़बान से सुनकर आते थे तो आप उसे बहुत ही ख़ूबसूरत और मुहब्बत के अन्दाज़ में यह कह कर दोहरवाती थीं कि ''बेटा आज तुम्हारे नाना ने नसीहत में क्या बयान फरमायाः''

चुनानचे एक रोज़ जनाब अमीरुलमोमिनीन अली बिन अबी तालिब (अ0) बेटे की समझदारी की ख़बर पाकर ख़ुश हुए और अन्दाज़े बयान देखने के लिये पर्दे के पीछे बैठे। माँ ने आदत के मुताबिक़ जनाब इमाम हसन (अ0) से पूछा– शहज़ादे ने विलायत की ख़ुशबू से असर लेते हुए अर्ज़ किया ''ऐ अम्मा जान आज तो ज़बान लड़खड़ाती है शायद मेरे बाबा देख रहे हैं।''

अब यह खुली हुई बात है कि जो कुछ कुर्आन में है। चाहे दीनी हो या दुनियावी, तहज़ीबी हो या कारोबारी सब कुछ रसूल (स0) ने उम्मत तक पहुँचाया और उसकी मुकम्मल तालीम नसीहत व फरमान सब कुछ बच्चों ने माँ तक पहुँचाया और माँ ने दोहराने के तौर पर सुना। बस क्या आज हमारी बहनों को अपने बच्चों में तालीम व तरबियत की तरफ इसका दसवाँ हिस्सा भी ख़याल है! लाख मक्तब जाएँ, मदरसे में किताबें उलटें, घर पर पढ़ाने वाले लगे हों मगर कभी किसी खुशनसीब माँ को इसकी तौफीक़ नहीं होती और न वह इस बात को समझती हैं कि फितरी मुहब्बत व उलफत की वजह से मेरे इस ध्यान का कितना गहरा असर छोटे बच्चों के दिल पर पड़ेगा।

अफसोस! मेरा तो ख़याल है कि माँ का थोड़ा सा ध्यान इस तरह होने से उस्ताद की मेहनत कभी बर्बाद न होगी और लड़के के दिल में माँ के ख़ुश रखने का शौक़ उनकी तालीम को दिन दूनी रात चौगनी कर देगा क्योंकि माँ की गोद लड़के के लिये दुनिया की जन्नत है।

तीसरा फ़र्ज़ घरेलू ज़िम्मादारियों का है कौन नहीं जानता कि शहंशाहे दो जहाँ पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ रसूलुस्सक़लैन की इकलौती चहीती बेटी होकर झाडू देना, बर्तन धोना, आटा गूँधना, तन्नूर रौशन करना, सीना पिरोना, चक्की चलाना, ऊन कातना, बच्चों की परवरिश, शौहर की ख़िदमत, पड़ोसियों की मदद और उनके ग़म में शरीक होना कौन सा काम ऐसा था जो जनाब फ़ातिमा (स0) अपने हाथों से खुद अन्जाम नहीं देती थीं यहाँ तक कि जो दिन जनाबे फ़िज़्ज़ा के काम करने का नहीं होता था जिन्हें आपकी ख़ादमा होने की इज़्ज़त मिली थी उस दिन उनके सामने तक खाना ले जाना आपकी आदत थी। लेकिन कभी किसी को शिकायत का मौक़ा न मिला। न कहीं से इस बात का पता चलता है कि आपने

काहिली व सुस्ती को रास्ता दिया हो या किसी की शिकायत की हो। बवजूद इन ज़िम्मादारियों के हमेशा सजद–ए–इलाही में रहीं और एक ख़ुदा के डर के साथ चुनानचे जनाब इमाम हसन अलैहिस्सलाम बयान करते हैं कि जब अम्मा जान मेहराबे इबादत में खड़ी होती थीं तो पूरा जिस्म बेद की तरह काँपता नज़र आता था और मुबारक चेहरा ज़र्द हो जाता था और इसे तो आम लोग देखते थे कि हर वक़्त आपके मुबारक हाथों से घर के कामों को पूरा किया जाता था और ज़बान माबूद के ज़िक्र में लगी रहती थी। यही वह अल्लाह की इबादत की बातें थी कि जब कभी तस्बीह पढ़ते–पढ़ते ऊँघ आ जाती तो फरिश्ते अल्लाह के हुक्म से आकर तस्बीह पढ़ते थे और दाने चलते हुए लोगों को नज़र आते थे।

अब बहनें ग़ौर करें कि इन घरदारी के कामों का मुकम्मल तरीक़े से खुद अपने हाथों से अन्जाम देना अपने आप में ऐसा था कि अगर इनके माली फायदों को जिसके ज़रिये से मर्द की आमदनी को यक़ीनी ताक़त पहुँचेगी नज़रअन्दाज़ कर दिया जाए तो भी कितने फायदे इससे ऐसे हासिल होंगे जो आज सैकड़ों रुपये के ख़र्च के बाद भी हासिल नहीं हो सकते जैसे सुब्ह सवेरे जागने का फायदा क्योंकि आम तौर पर इन कामों को पूरा करने की फिक्र में हमेशा सुबह सवेरे उठना पड़ेगा। बस वह नुक़सानात जो सात–सात आठ–आठ बजे तक पलंग पर करवटें बदलने से सामने आते हैं यानी फेफड़ा ख़राब हो जाता है। ख़ाने के हाज़मे में ख़राबी पैदा होती है। सुस्ती व काहिली महसूस होती है, जो अपने आप जाती रहेंगी और दूसरी बीमारियों का शिकार न होंगे। अच्छी ख़ासी कसरत हो जाएगी। जिस्म मज़बूत व तन्दुरुस्त होगा। खाना पूरी तरह हज़म होगा। पेट और जिगर की कमज़ोरी की शिकायत ख़त्म हो जाएगी। चेहरे पर ख़ून नज़र आने लगेगा। इसके अलावा डाक्टरी और शरई उसूल के हिसाब से रात के पहले हिस्से में सोने और आख़िर हिस्से में जागने की ज़रूरत होगी जिससे अपने आप तन्दुरुस्ती बाक़ी रहेगी और यही तरीक़ा रात के पहले हिस्से में सोने और आख़िर में जागने का फितरत ने भी बताया है। माएँ जानती हैं कि मासूम बच्चे रात के शुरु में सोते हैं और आख़िर हिस्से में जागते हैं।

इसलिए अब हमारी बहनें हमें बताएँ कि जनाबे फ़ातिमा (स0) का इस तरह से अपनी पाक व रौशन ज़िन्दगी में अमली नमूना पेश करना क्या हमें यही सबक़ देता है कि हम उनसे जुड़े होने का दावा करे। बग़ैर वज़ू नाम लेना अदब के ख़िलाफ जानें। उनकी नज़र व नियाज़ ढाँक कर दें, अपनी बेटियों का नाम उनके नाम व ख़िताबात व अलक़ाब के सहारे रखने में दोनों जहानों की कामियाबी समझें। उनकी मुसीबतों और परेशानियों पर गिरया करें। मासूमा (स0) को तकलीफ देने वालों से बेज़ारी करें लेकिन उनकी अमली तालीम को ओछी नज़र से भी न देखें। मिसाल के तौर पर बयान करती हूँ कि हमको अच्छी तरह मालूम है कि आप मुसीबत तन्गी व परेशानियों के मौक़ों पर जो इस पाक व पाकीज़ा घर की इस हिसाब से ख़ुसूसियत थी कि न जाने इस घर की फाक़ाकशी क़ुदरत को कितनी पसन्द थी लेकिन सिवाए सब्र व शुक्र के कभी कोई लफ्ज़ निकलना तो दूर रहा दिल में भी बेचैनी और परेशानी का शक भी पैदा न हुआ। हमेशा खजूर के पत्तों के पेवन्द की चादर सर पर रही मगर अल्लाह के शुक्र में ज़बान हिलती रही। जिसका ज़िक्र आज तक हम फख़्र के साथ

अपनी महफिलों, मज्लिसों, घरों, अज़ीज़ों, दोस्तों में करते हैं लेकिन किसी मोमिना के पेवन्द वाले कपड़ों को देखकर हमारी निगाहों में उसकी इज़्ज़त कम हो जाती है। हम उसका मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं। सामने न सही तो पीठ पीछे जो कुछ जी में आता है कह गुज़रते हैं। यह नहीं सोचते कि अगर पेवन्द लगाकर पहनना या परेशानी और तकलीफ में ज़िन्दगी गुज़ारना हमारे यहाँ शर्म की निशानी और बेइज़्ज़ती व मज़ाक है तो हमारे इस निशानी बनाने से मासूम–ए–कौनैन (स0) का क्या दर्जा रह जाता है।

इसलिए हम को ऐसी बातों से बचना चाहिए और उन मौक़ों पर जिनमें मासूम–ए–कौनैन के तज़करें होते हैं उनकी अमली ज़िन्दगी को बयान करके अपनी बहू, बेटियों को उनके अपनाने का सबक़ पढ़ना चाहिए ताकि अच्छे अख़लाक़, रवादारी, इन्साफ, हक़ बात कहना, हमदर्दी, बर्दाश्त और ईसार पैदा हो और हम मेहनत मज़दूरी और परेशानी से मुहब्बत करके सही मानों में मासूम–ए–कौनैन की पैरवी करने वाली कहलाएँ। मैं सही अर्ज़ करती हूँ कि हमारे लिये यही तरीक़ा बरकत व कामियाबी वाला है और हम इसको अपनाकर दीन व दुनियामें बुलन्द होंगे वरना ऐसे दौर में जब कि मग़रिबी ज़हरीली हवाएँ बहुत ही तेज़ी के साथ क़ौमियत व मज़हबियत को ज़हर से भरती जा रही हैं इस तरह रुख़ करने से हमारी इज़्ज़त, हमारी अज़्मत, हमारी पाकदामनी, हमारी इस्मत, हमारा दीन, हमारा मज़हब परेशानी में पड़ जायेगा क्योंकि हमारे बच्चे हमारी इस रोज़ाना नये रंग में बदलने वाली हालत से सबक़ लेकर बहुत जल्द किसी दूसरे रंग में रंग उठेंगे जिसमें दुनिया व आख़िरत दोनों में नुक़सान उठाएँगे। □□□

शेष....इमामे सज्जाद (अ0) की समाजी शख़्सितय

इमाम (अ0) ने अपने इरादे की वज़ाहत करते हुए फरमायाः आयत का इसके बाद का हिस्सा पढ़ो जिसमें मोमिनों की ख़ूबियाँ बयान हैं। ''यह लोग तौबा करने वाले, इबादत अन्जाम देने वाले, ख़ुदा की तारीफ करने वाले, ख़ुदा के रास्ते में सफर करने वाले, रुकू करने वाले, सिजदा करने वाले, नेकियों का हुक्म देने वाले, बुराईयों से रोकने वाले, और अल्लाह की हदों की हिफाज़त करने वाले हैं, ऐ पैग़म्बर (स0) आप इन्हें जन्नत की ख़ुशख़बरी दे दें'' फिर फरमाया ''अगर इन ख़ूबियों वाले मोमिन हों तो हम जिहाद को किसी चीज़ पर तरजीह नहीं देंगे।

इस जवाब में इमाम सज्जाद (अ0) ने अपनी सियासत, अपना अन्दाज़ और अपने दौर के सुधार की कोशिश के तरीक़े को बिलकुल साफ कर दिया। और उन वजहों को भी बता दिया जिनकी बुनियाद पर इमाम को वह तरीक़ा इख़्तियार करना पड़ा था। बस इमाम सज्जाद का क़याम न करना और उमवी हुकूमत से जंग न करना इस वजह से न था कि आप दुनियावी आराम चाहते थे। जैसा कि इबाद अलबसरी के सवाल से ज़ाहिर होता है। बल्कि इमाम (अ0)का यह इक़दाम सिर्फ इसलिए था कि आप यक़ीनी तौर पर यह जानते थे कि जंग में जीत का कोई सवाल नहीं, बल्कि इन हालात में वक़्त के हाकिम के ख़िलाफ कोई इक़दाम भी इसके बिलकुल उलट (शर्म और हार) होगा। और इसी वजह से इमाम (अ0) ने इन हालात में उम्मत के सुधार का एक नया तरीक़ा अपनाया जिसके गोशों की तरफ हम आगे इशारा करेंगे। □□□

इदारा

मुख्य समाचार

मक्का मस्जिद बम धमाके की उलमा ने पुरज़ोर मज़म्मत की

लखनऊ। हैदराबाद की मक्का मस्जिद में ठीक नमाज़ के बीच हुए बम धमाके पर उलमा–ए–किराम ने सख़्त रद्दे अमल का इज़्हार करते हुए दहशतगर्दों के ख़िलाफ सख़्त से सख़्त कारवाई करने का मुतालबा किया।

मौलाना कल्बे जवाद साहबः ने मक्का मस्जिद बम धमाके की मज़म्मत करते हुए कहा कि हुकूमत की ला परवाही का नतीजा है उन्होंने कहा कि इससे पहले बहुत सी जगहों पर जो बम धमाके हुए उनमें बिना किसी छानबीन के मुस्लिम तनजीमों को ज़िम्मेदार क़रार दिया गया और मुसलमानों पर गोली चलाई गई मुस्लिम नौजवानों को गिरफ्तार किया गया। मौलाना ने इसे अमरीकी और इस्राईली साज़िश क़रार दिया। उन्होंने कहा कि मुसलमान कैसा भी हो अपनी इबादतगाह में बम नहीं रख सकता। मौलाना ने साफ कहा कि इससे पहले भी कुछ तनज़ीमों ने धमकी दी थी मगर उस पर हुकूमत ने ध्यान नहीं दिया अब वक़्त आ गया है कि मुसलमान अपनी इबादतगाहों की हिफाज़त ख़ुद करे।

मौलाना अब्दुल अलीम फारूक़ीः ने इस हादसे की पुरज़ोर मज़म्म्त करते हुए इसे अमन के ख़िलाफ साज़िश क़रार दिया। उन्होंने कहाकि यह काम इन्सानियत से दुश्मनी रखने वाले ज़हन का है जिसका कोई मज़हब नहीं होता उन्होंने साफ तौर पर कहा कि इसका सरचश्मा अमरीका है और पूरी दुनिया पर अपनी धौंस क़ायम करना चाहता है उन्होंने मुसलमानों से अमन व चैन क़ायम रखने की अपील के साथ ही हुकूमत से कारवाई का मुतालबा करते हुए शहीदों के लिए दुआ और वारिसों के लिए सब्र की अपील की।

मौलाना ख़ालिद रशीद फिरंगीमहलीः ने धमाके की पुरज़ोर मज़म्मत करते हुए कहा कि यह काम बहुत ही अफसोसनाक है इसकी जितनी भी मज़म्मत की जाए कम है उन्होनें बताया कि मुहक्म–ए–दाख़ला ने हुकूमत को आगाह किया मगर इसके बावजूद हुकूमत ने ठीक तरह से कारवाई नहीं की। मौलाना ने कहा हमारा हुकूमत से मुतालबा है कि असली क़ुसूरवारों को सज़ा दी जाए बिना जाँच पड़ताल किसी को फंसाया न जाए मौलाना ने मुसलमानों से अपील की कि वह अम्नो अमान क़ायम रखें और दुश्मनों की साज़िश को कामियाब न होने दें।

इसके अलावा मौलाना जहाँगीर आलम क़ासमी, मौलाना हमीदुल हसन, मौलाना फज़्लुर्रहमान वाएज़ी नदवी साहेबान और दूसरे उलमा ने धमाके की मज़म्मत करते हुए मुसलमानों से अपील की कि वह आपस में भाईचारा क़ायम रखें।

इस्राईली फौजियों की रिहाई पर बातचीत आगे बढ़ीः सै0 हसन नस्रुल्लाह

लखनऊ। हिज़्बुल्लाह के रहनुमा हुज्जतुल इस्लाम सै0 हसन नस्रुल्लाह ने लेबनान के भूतपूर्व प्रधानमंत्री रफीक़ हरीरी के क़त्ल के मामले की सुनवाई के लिए संयुक्तराष्ट्र के ज़ेरे इन्तिज़ाम बैनुलअक़वामी अदालत की राय को ठुकरा दिया। हसन नस्रुल्लाहने ईरानी अरबी टेलीवीज़न चैनल अलआलम को दिये इण्टरव्यु के दौरान इस पेशकश को ठुकरा दिया। दूसरी तरफ उन्होंने बताया कि बन्दी बनाए गये इस्राईली फौजियों की रिहाई के बारे में बातचीत आगे बढ़ी है और जल्द ही इस मामले का हल निकाल लिया जाएगा। नस्रुल्लाह ने ईरान के अलआलम टेलीवीज़न चैनल को इण्टरव्यु देते हुए कहा कि हमें बन्दियों के बारे में कोई परेशानी नहीं है हमारे दो बन्दी हैं और हम उनके बारे में बात कर रहे हैं उन्होंने कहा कि यह मसला हल होने वाला है इसमें अब थोड़े ही वक़्त की बात है और उन्होंने और कोई वज़ाहत नहीं की। याद रहे कि दो इस्राईली फौजियों की बन्दी बनाने के ख़िलाफ इस्राईल ने जुलाई 2006 ई0 में लेबनान पर चौंतीस दिनों तक बम्बारी की थी सूत्रों के मुताबिक़ संयुक्तराष्ट्र की मध्यस्ता में हिज़्बुल्लाह के मुजाहिदों की रिहाई के बदले इस्राईली फौजियों को आज़ाद करने के बारे में बात हो रही है।

अरब हुक्मरान ख़लीज को ग़ैरमुल्की फौजों से पाक करें: महमूद अहमदी नेजाद

अबुधाबी। ईरानी राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद ने संयुक्त अरब इमारात के एतिहासिक दौरे के मौक़े पर अरब हुकमरनों से ख़लीज को ग़ैरमुल्की फौजों से पाक करने की अपील की। 1979 ई0 के इस्लामी इंक़िलाब के बाद किसी ईरानी सरकारी ओहदेदार का संयुक्त अरब इमारात का यह पहला दौरा है। संयुक्त अरब इमारात के राष्ट्रपति शैख़ ख़लीफा बिन ज़ाहिदुन्नहयान और उपराष्ट्रपति व प्रधानमंत्री शैख़ मुहम्मद इब्ने रशीद अलमख़तूम ने हवाई अड्डे पर ईरानी राष्ट्रपति का बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया। ध्यान रहे कि ईरानी राष्ट्रपति का यह दौरा अमरीका के उपराष्ट्रपति के दौरे के कुछ दिनों बाद ही हुआ है जिसमें उन्होंने धमकी दी थी कि अमरीका ईरान को न्युकिलियाई हथियार हासिल करने की इजाज़त नहीं देगा। सरकारी ख़बर रसाँ एजेन्सी वाम ने बताया कि शैख़ ख़लीफा और अहमदी नेजाद ने आपसी दिलचस्पी के मामलों में बातचीत की। और उम्मीद ज़ाहिर की कि इस दौरे से दोनों मुल्कों के ताल्लुक़ात और मज़बूत होंगे जिससे दोनों मुल्कों की अवाम को फाएदा पहुँचेगा। इसी बीच महर न्यूज़ एजेन्सी ने ख़बर दी है कि ईरानी राष्ट्रपति ने कहा कि एक दूसरे की मदद से हम ख़लीज को अम्न व दोस्ती के जज़ीरे में बदल सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी ख़्वाहिश है कि ग़ैर मुल्की फौज इस ख़ित्ते को छोड़कर चली जाए ताकि इस ख़ित्ते के मुल्कों को अपने बलबूते पर अपनी हिफाज़त करने का मौक़ा मिल सके। दोनों रहनुमाओं ने मश्रिक़े वुस्ता ख़ासकर इराक़ व फिलस्तीन की सूरते हाल पर भी बातचीत की। शैख़ ख़लीफा ने इराक़ में क़ौमी समझदारी और मश्रिक़े वुस्ता में अम्न बहाल करने पर ज़ोर दिया।

दोनों मुल्कों ने ताल्लुक़ात को और मज़बूत करने के लिये अपने–अपने विदेशमंत्रियों की सरबराही में एक मुशतरका कमेटी बनाने का भी फैसला किया। इस वक़्त संयुक्त अरब इमारात ईरान का सबसे बड़ा तिजारती साथी है। शैख़ ख़लीफा ने कहा कि संयुक्त अरब इमारात चाहता है कि इस ख़ित्ते को जिन वजहों की बुनियाद पर हालात से दोचार होना पड़ रहा है उनसे हमेशा के लिये नजात मिले ताकि ख़ित्ते में मुस्तक़िल और पूरी तरह अम्न क़ायम हो सके।

आह! मौलाना सै0 मुहम्मद साहिब बासटवी ताबा सराह

लखनऊ। अफसोस कि 13 अप्रैल 2007 ई0 को बुज़ुर्ग आलिमे दीन मौलाना सै0 मुहम्मद बासटवी पेश नमाज़ रियासत रामपुर का इन्तेक़ाल हो गया। वतन में मरहूम की तदफीन हुई। मौसूफ कई किताबों के मुसन्निफ थे। 14 अप्रैल को नूरे हिदायत फाउण्डेशन इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमाब में क़ाएदे मिल्लत की सदारत में ताज़ियती जलसा हुआ जिसमें मौलाना की हयात और उनके कारनामों पर बयानात हुए और मरहूम की रेहलत पर शदीद रंज व ग़म का इज़हार किया गया। इदारा मरहूम के वरसा को ताज़ियत पेश करता है और मोमिनीन से फातेहाख़्वानी की दरख़्वास्त करता है।

ताजपुर अम्बेडकर नगर में सालाना मजलिसों का इन्एक़ाद

ताजपुर। 20 मई 2007 ई0 को मौज़ा ताजपुर में अलइमाम चेयरटेबल फाउण्डेशन की जानिब से दो तबलीग़ी मज्लिसों का इन्एक़ाद किया गया। पहली मज्लिस को क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहिब क़िब्ला ने और दूसरी मज्लिस को मुफक्किरे आली क़दर मौलाना सै0 अबुलक़ासिम साहिब ने ख़िताब फरमाया। प्रोग्राम के संचालक और फाउण्डेशन के चेयरमैन ने शरीक होने वालों का आख़िर में शुक्रिया अदा किया। यक़ीनन यह सालाना प्रोग्राम जो पिछले तक़रीबन 70 सालों से जारी है तारीख़ी हैसियत वाला है जिसमें बराबर उमदतुल उलमा ज़ाकिरे शामे ग़रीबाँ मौलाना सै0 कल्बे हुसैन साहिब, सैयिदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी साहिब और सफवतुल उलमा मौलाना सै0 कल्बे आबिद साहिब रहमतमाब ज़ाकिरी फरमाते रहे।

جولائی-اگست ۲۰۰۷ء

مرسل اعظم نمبر

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ



موسسہ نور ہدایت حسینیہ غفران مآب لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526 Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07
July-Aug. 2007

मासिक

शुआ-ए-अमल

लखनऊ

मुरसले आज़म नम्बर



مسجد جامع آصفی لکھنؤ

Monthly **SHUA-E-AMAL** Lucknow



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Ma'ab, Chowk,Lucknow-3

वर्ष–4

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 1–2

माह जुलाई – अगस्त 2007 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

मुरसले आज़म नम्बर

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

मुरसले आज़म नम्बर

वार्षिक – 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत – 40 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

website: www.noorehidayat.com
e-mail: noorehidayat@noorehidayat.com

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

अक़वाले मुरसले आज़म (स॰)

1– **तुम्हारा बेहतरीन दोस्त वह है जो तुम्हारी ग़लतियों पर तुमको आगाह करे और नेक काम की तरफ रागिब करे।**

2– **तुम में सबसे नेक शख़्स वह है जो अपने गुस्से को पी जाए और ताक़त के बावजूद नर्मी से काम ले।**

3– **बच्चों के जो हुक़ूक़ माँ–बाप पर हैं उनमें यह भी है कि उनका ख़ूबसूरत नाम रखें और उनकी सही तरबियत करें।**

नबी (स.) की ज़िन्दगी की झलकियाँ

आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यद अली ख़ामेना–ई मद्दज़िल्लहूश्शरीफ

तमाम भाइयों और बहनों और अपने आप को अल्लाह के तक़वे, चाल–ढाल, बातचीत में सच्ची नियत, सीधे रास्ते पर चलते रहने के लिए ख़ुदा से मदद माँगने की गुज़ारिश करता हूँ।

पैग़म्बरे अकरम (स.) अपने मानवी और नूरानी ख़ूबियों और बुलन्द व ऊँचे दर्जों जिनको समझने से भी हम मजबूर है इनके अलावा इन्सानी एतेबार से भी आप ग़ैर मामूली शख़्सियत वाले थे। आप लोगों ने हज़रत अली (अ.) के सिलसिले में बहुत कुछ सुना होगा आप (अ.) रसूल (स.) के शार्गिदों में से एक शार्गिद थे।

ख़ुदावन्दे आलम ने आपकी रूहानी और अख़लाक़ी शख़्सियत की इस तरह तरबियत की ताकि आप इस बड़ी अमानत के बोझ को आसानी के साथ संभाल सकें।

बचपन

अगर आपके बचपन के दौर को देखा जाए तो एक रिवायत की बुनियाद पर आपके पिताश्री पैदाइश से पहले और दूसरी रिवायत से आपकी पैदाइश के कुछ महीनों बाद गुज़र गये। इस दौर के रस्म व रिवाज के मुताबिक़ शरीफ ख़ानदानों का यह चलन था कि अपने बच्चों को पाकदामन और साफ सुथरी औरतों के हवाले कर दिया करते थे, इसलिए आप (स.) को भी बनी साद के क़बीले की एक शरीफ औरत जनाब हलीमा सादिया के हवाले कर दिया गया। उन्होंने तक़रीबन छः साल तक आपकी परवरिश करने के बाद हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के हवाले कर दिया आप, रसूल (स.) को अपनी जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे। एक शेअ्र में हज़रत अब्दुल मुत्तलिब इस तरह फरमाते हैं कि मैं ख़ुदा के रसूल (स.) के लिए माँ की तरह हूँ। अब्दुल मुत्तलिब ने आपके लिये इस तरह मुहब्बत और मेहरबानी की कि ज़र्रा बराबर भी इसमें कमी का एहसास न होने दिया। यहाँ तक कि सब लोग इस मुहब्बत पर ताज्जुब करते थे। तारीख़ में मिलता है कि कभी–कभी जनाब अब्दुल मुत्तलिब के काबा के पास एक बिस्तर बिछा दिया जाता था और बनी हाशिम के जवान इसके आसपास बहुत ही इज़्ज़त व शराफत के साथ इकटठा होते थे लेकिन जनाब अब्दुल मुत्तलिब के न होने पर रसूल (स.) उस बिस्तर पर जलवा बिखेरते थे और जब जनाब अब्दुल मुत्तलिब आते थे तो बनी हाशिम के जवान कहते थे कि उठो यह अब्दुल मुत्तलिब की जगह है लेकिन जनाब अब्दुल मुत्तलिब फरमाते कि नहीं उनकी जगह भी यही है और फिर आपके क़रीब बैठ जाते थे। अभी आपकी उम्र आठ साल थी कि जनाब अब्दुल मुत्तलिब भी इस दुनिया से चल बसे। रिवायत के मुताबिक़ आपने इन्तेक़ाल से पहले अपने बेटे जनाब अबुतालिब से बैअत ली और बहुत ही ज़्यादा ताकीद के साथ बच्चे को आपके हवाले कर दिया और कहा जिस तरह मैंने इस बच्चे की हिफाज़त की है इसी तरह अब यह ज़िम्मेदारी तुम्हारी है। जनाब अबुतालिब ने भी ख़ुशी–ख़ुशी इस ज़िम्मेदारी को क़बूल किया। अपने घर लाये और फिर आपने और

आपकी बीवी जनाब फातिमा बिन्ते असद ने तक़ीरबन 40 साल तक अपनी जान व माल, ग़रज़ हर तरह से आपकी मदद व हिफाज़त की।

नबी (स०) का अख़लाक़

आपके अन्दर वह तमाम ख़ूबियाँ इकटठा थीं जो एक मुकम्मल इंसान के अन्दर मौजूद होनी चाहियें। अगर रसूल (स०) के अख़लाक़ को बयान करना चाहें तो आपके अख़लाक़ को दो हिस्सों में बाँट सकते हैंः ज़ाती अख़लाक़, हुकूमती अख़लाक़ (मामलों की तदबीर)

ज़ाती अख़लाक़

आप (स०) अमानतदार, सच्चे, सब्र करने वाले, बहादुर और नर्म थे। हमेशा मज़लूमों को बचाते थे और आपकी चाल व किरदार की बुनियाद सच्चाई और सफाई पर थी, आप बदज़बान नहीं बल्कि अच्छा बोलने वाले थे। जज़ीर–ए–अरब के गिरे हुए अख़लाक़ के बावजूद आप उम्र के हर हिस्से में एक अमानतदार और किरदार वाले के नाम से जाने जाते थे और हर तरह की गन्दगी से पाक थे जो लोगों की ज़बान पर था।

कपड़े व जिस्म की पाकीज़गी, चाल ढाल की सच्चाई में अकेले थे। बहादुरी का यह हाल था कि दुश्मन के मुक़ाबले में कभी आपके क़दमों में कमज़ोरी नहीं देखी गई। आप साफ बोलने वाले थे यानी अपनी बात को सच्चाई और सफाई के साथ बयान करते थे। तक़वा व परहेज़गारी आपकी आदत थी।

मुख़्तसर यह कि आपकी 63 साल की ज़िन्दगी में इन ख़ूबियों और बड़ी सिफतों को अच्छी तरह देखा जा सकता है। मैं हज़रत (स०) की कुछ ख़ूबियों पर रौशनी डालना चाहता हूँः

अमानतदारी

आपकी अमानतदारी का यह हाल था कि जाहिलियत के ज़माने में भी लोग आपको अमीन कह कर पुकारते थे। लोग अपनी क़ीमती चीज़ों को बहुत इत्मिनान के साथ आपकी ख़िदमत में लाकर रखते थे। यहाँ तक कि इस्लाम की दावत के बाद भी जबकि कुरैश की मुख़ालेफत ज़ोरों पर थी लोग अपनी अमानों को हुजूर की ख़िदमत में लाकर रखते थे और जैसा कि आप जानते हैं कि जब रसूले अकरम (स०) ने मक्का से मदीन हिजरत की तो लोगों की अमानतों को हज़रत अली (अ०) के हवाले कर दिया और ज़ोर दिया कि तुम कुछ दिन मक्के में रहो और लोगों की अमानतें वापस करके मेरे पास आना।

नर्मी

आपकी नर्मी का यह हाल था कि जिन बातों को सुनकर आपके साथी या दूसरे लोग बेताब हो जाया करते थे आप उसका असर सामने नहीं लाते थे। कभी–कभी मक्के में आप (स०) के मुख़ालिफ लोग आपके साथ बहुत ही बेअदबी के साथ पेश आते थे चुनानचे एक बार जनाब अबुतालिब को मालूम हुआ तो वह बहुत नाराज़ हुए और गुस्से में अपनी तलवार को मियान से बाहर निकाल लिया और फिर जिसने जो ज़्यादती की थी उसके साथ वैसा ही सुलूक किया और कहा कि अगर किसी ने बोलने की हिम्मत की तो गर्दन उड़ा दूँगा।

जाहिलियत के ज़माने में ''हिल्फ़ुल फुज़ूल'' में भी आप (स०) शरीक थे। एक बार कोई मुसाफिर अपने सामान को बेचने के लिये मक्का में आया। आस इब्ने वाएल ने इससे माल लेकर रख लिया,

लेकिन क़ीमत देने से इन्कार कर दिया। वह बेचारा परदेसी मुसाफिर बहुत से लोगों के पास शिकायत लेकर गया लेकिन कोई कुछ न बिगाड़ सका। यहाँ तक कि अबु कुबैस पहाड़ पर गया और फरियाद करने लगा कि ऐ फहर की औलाद! मेरे ऊपर जुल्म हुआ है। रसूल (स०) और आपके चचा ज़ुबैर बिन अब्दुल मुत्तलिब ने जब उसकी फरियाद सुनी तो उसके क़रीब आए उसने सारे हालात सुनाए। आप आस इब्ने वाएल के पास गये और फरमायाः उसकी क़ीमत क्यों नहीं देते। आस घर के अन्दर आया और फिर मजबूर होकर उसने उस माल की क़ीमत अदा कर दी। यह अहद व वादा इसी तरह बाक़ी रहा जो भी मक्का आता और उस पर जुल्म होता तो आप उसका हक़ दिलवाते। इस्लाम की दावत के बरसों बाद भी हज़रत फरमाते थे कि मैं अब भी इस अहद व वादे पर बाक़ी हूँ।

सफाई और पाकीज़गी

आप बचपन से ही पाक साफ रहते थे और अरब क़बीलों के बच्चों के उलट बहुत ही उसूल वाले थे। नौजवानी, जवानी आप हर ज़माने में अपना सर और चाल–ढाल संवार कर रखते थे और बालों में कंघा करते थे। जवानी का ज़माना गुज़रने के बाद जब कि आपकी उम्र 50 साल हो चुकी थी, तो सफाई का पूरा ख़याल रखते थे, ख़ुशबू लगाते थे। मैंने एक रिवायत में देखा है कि चूँकि उस वक़्त आईने का चलन नहीं था तो आप साफ पानी में देखकर अपनी पगड़ी और बालों को ठीक करते थे, इसके बाद साथियों और दोस्तों से मिलने के लिये बाहर जाते थे।

ज़ाहिदाना ज़िन्दगी के बाद भी सफर में ख़ुशबू और सुरमा साथ रखते थे और इसके पाबन्द थे। कई बार मिसवाक करते थे दूसरों को भी अपनी तरह से पाक व पाकीज़ा रहने पर ज़ोर देते थे। कुछ लोग इस ग़लतफहमी में फंसे हैं कि यह सब बेकार के ख़र्च के बिना मुमकिन नहीं है। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि इन्सान पुराने और पेवन्द लगे कपड़ों के साथ भी ढंग और क़ाएदे से रह सकता है।

आप लोगों से ख़ुशहाली और ख़ुशी–ख़ुशी से मिलते थे अगरचे अकेले में सारे ग़म व अफसोस ज़ाहिर हो जाते थे लेकिन कभी आम लोगों में इसको ज़ाहिर नहीं किया।

इबादत

रमज़ान के महीने के अलावा, रजब व शाबान और साल के बाक़ी दिनों में भी जब गर्मी सख़्ती इख़्तियार कर लेती थी, लू का ज़माना होता था तब भी आप (स०) रोज़ा रखते थे। आपके साथियों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल आपने तो कभी गुनाह ही नहीं किया। सूर–ए–फतह में यह आयत मौजूद है कि ''जब आप इतनी दुआ और इस्तेग़फार किस वजह से करते हैं?'' ख़ुदा के रसूल (स०) ने जवाब दिया ''क्या इतने इनामों के बाद में अल्लाह का शुक्र अदा करने वाला बन्दा न रहूँ''

हुकूमती अख़लाक़ (मामलों की तदबीर)

अगर आप (स०) के हुकूमती अख़लाक़ को देखा जाए तो आप पहली सफ के इन्साफ करने वाले और मामला समझने वाले थे। वह क़बीलों की जंगें जो इन्सान की अक़ल हैरान कर दें उन सबको रसूल (स०) ने अपनी समझदारी और हिक्मत से ख़त्म कर दिया।

(बक़िया ....पेज 8 पर)

रसूले इस्लाम (स0) की सीरत मुदब्बिर की हैसियत से

इमादुल उलमा अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहिब क़िब्ला मुजतहिद

सरवरे काएनात (स.) की समझदारी पर बहस करने से पहले उन हालात और उस माहौल को देखना ज़रूरी है जिसमें आपने रिसालत की तबलीग़ के काम को शुरु किया था। आपकी मुबारक ज़िन्दगी का एक हिस्सा तो वह था जिसमें आप मक्का में रहे और दूसरा हिस्सा वह था जिसमें आप मदीने में रहे।

बेअ्सत शुरु होने के बाद तक़रीबन 13 बरस तक आप मक्के में रहे थे। ज़ाहिर है कि उस वक़्त मक्के वाले और आसपास के सभी क़बीले आपके सख़्त मुख़ालिफ और दुश्मन थे और आपको हर वक़्त अपनी जान का डर रहता था सभी कुफ्फार व मुश्रिकीन आपको तकलीफ़ पहुँचाते यहाँ तक कि आपकी जान लेने पर तुले हुए थे। आपके साथ गिन्ती के कुछ लोग थे वह किसी तरह भी कुरैश और उनका साथ देने वाले क़बीलों की एकजुट ताक़त का मुक़ाबला नहीं कर सकते थे न उनके पास ज़रूरत के हिसाब से दौलत थी न फ़ौज और न हथियार ऐसे ख़तरनाक माहौल में रसूल (स.) की यह बेमिसाल समझदारी ही थी कि आपने बिना जंग किये मक्का वालों और आसपास की तमाम आबादियों तक इस्लाम की आवाज़ को पहुँचा दिया जिसके नतीजे में बड़े–बड़े नाम वाले ख़ानदानों के लोग मुसलमान हो गये और यह सिलसिला बहुत ही रुकावटों के बाद भी तेज़ी से आगे बढ़ने लगा कुरैश के काफिर आपको बहुत ज़्यादा तकलीफें देते थे मगर उनके लिये यह मुमकिन न था कि वह आप (स.) के काम को रोक सकें।

रसूल (स.) सब्र व नर्मी के साथ तमाम तकलीफें बर्दाश्त करते रहे और कभी एक पल के लिये भी आपकी मज़बूती में फ़र्क़ न आया। कोई दूसरा होता तो वह तकलीफों और परेशानियों से घबराकर कुछ न कुछ क़दम उठा ही लेता मगर आपने अपने दुश्मनों की किसी हरकत का जवाब न दिया और न अपने साथियों को इसकी इजाज़त दी कि वह तलवार से उनका मुक़ाबला करें क्योंकि उस वक़्त जंग करना मुसलमानों के लिये तबाही और बर्बादी को दावत देना था। बजाए इसके आपने इस पूरे ज़माने में सिर्फ समझदारी और अख़लाक़ के ज़रिये जंग लड़ी। आपके ख़यालात आपके सिपाही थे और आपका सब्र व नर्मी आपका हथियार था जिससे आपके दुश्मन बौखला गये और उन्हें अपने पैरों के नीचे से ज़मीन हिलती नज़र आने लगी और आख़िर उन्होंने तय कर लिया कि वह किसी न किसी तरकीब से आपको ख़त्म कर दें। यह वह वक़्त था जब आपकी आवाज़ दूर–दूर तक पहुँच चुकी थी और मदीने की एक बड़ी जमाअत भी इस्लाम क़बूल कर चुकी थी और 13 बरस के लम्बे ज़माने में मक्के के रहने वालों और आसपास के लोगों ने आपकी ज़िन्दगी और आपकी बातों को बहुत क़रीब से पूरी तरह देख लिया था। यही वह वक़्त था जब इस बड़े समझदार ने इसका फैसला

किया कि अब वह अपने बाप–दादा के शहर को छोड़कर मदीने की तरफ हिजरत करें। शुरु में आपके मक्के में ठहरने और वहाँ रहकर बराबर तकलीफें सहते रहने के राज़ को शायद कुछ लोग न समझे हों और इसे आपकी बेबसी और मजबूरी का नतीजा समझते हों लेकिन तारीख़ी हक़ीक़तों ने यह साबित कर दिया कि अल्लाह के रसूल (स॰) का यह तरीक़ा बेबसी और लाचारी की वजह से न था बल्कि बड़ी समझदारी का नतीजा था क्योंकि एक तरफ तो मक्का के मुसलमानों की गिन्ती बहुत कम थी, उनके पास जंग का सामान न था, उनमें जंगी तन्ज़ीम न थी और उनका कोई अलग मरकज़ न था, जो दुश्मन की साज़िश से पूरी तरह महफ़ूज़ होता और सबसे बड़ी बात यह थी कि अगर किसी सूरत से भी जंग छेड़ दी जाती तो फिर आपके दुश्मनों को आपकी सीरत और किरदार के परखने और समझने का मौक़ा न मिल सकता। इस सब्र व नर्मी का असर यह हुआ कि लोगों ने बड़े सुकून के साथ आपकी बातों पर ग़ौर किया और अन्जाने तरीक़े पर आपके मज़लूम होने, आपके अच्छे अख़लाक़ की कशिश, आपके पैग़ाम की सादगी और सच्चाई उनके दिलों में और उनकी समझ व एहसास को जीतती रही और वह दुश्मनी व नफरत की उस आग की लपेट में न आ सके जो जंग छिड़ जाने के बाद आमने सामने के लोगों में भड़कने लगती है और उसकी बाहरी और अन्दरूनी आँखों को अन्धा कर दिया करती है। इस तरह 13 साल के बराबर सब्र व नर्मी, ख़यालात सीरत व किरदार का एक साथ होना, अम्न पसन्दी, अमानत, दयानत हक़ के एलान में मिसाली जुरअत व दिलेरी और आपका पूरी तरह डटे रहना और बेमिसाल साबित क़दमी ने धीरे से आपके दुश्मनों की एकता और इत्तेहाद में टाँग अड़ा दी थी और उनकी सफों में नामर्दी पैदा कर दी थी जिसका पता लोगों को उस वक़्त चला जब 8 हिजरी में मक्का की जीत के मौक़े पर सारे क़ुरैश ने एक आवाज़ के साथ अपने इस्लाम का एलान कर दिया था। यह बड़ी हद तक आपके उसी सब्र व नर्मी का नतीजा था जो आपने मक्का में रहकर और क़ुरैश का ज़ुल्म व सितम बर्दाश्त करके किया था।

अगर आप मक्का वालों से उस वक़्त जंग शुरु कर देते, या वहाँ से किसी दूसरी जगह चले जाते तो उनके दिलों पर आपकी सीरत और आपकी तालीम का वह नक़्श न बनता जो इस सूरत में हुआ और यह सब कुछ आपकी बड़ी समझदारी ही का नतीजा था।

मक्का बेशक अरबों की तहज़ीब का सबसे बड़ा मरकज़ था, वह उम्मुल क़ुरा कहलाता था। वहाँ हज का फरीज़ा अदा करने के लिए अरब के कोने–कोने से लोग इकटठा होते थे और इस जमा होने की वजह से इनके दिलों में जो असर पैदा होते थे उनमें और बढ़ोत्तरी पैदा हो जाती थी और उनकी तबलीग़ अरबों के एक–एक घर में अपने आप हो जाया करती थी इसलिए काफी ज़माने तक आपका वहाँ रहना बहुत असर वाला साबित हुआ और अगरचे आपको बहुत ही ज़्यादा तकलीफें उठानी पड़ीं लेकिन आपका पैग़ाम अरबों की सोंच और फिक्र पर छा गया और इस्लामी तहरीक के लिए सारे रास्ते बराबर हो गये इस तरह 13 साल तक आप (स॰) मक्के में रहकर फिर मदीने में तशरीफ लाए और उसे अपना मरकज़ बना लिया। तायफ और दूसरी जगहों के मुक़ाबले में मदीने की अहमियत बहुत ज़्यादा थी इसलिए कि यह मक्का और शाम के रास्ते में था और मक्के वालों के तिजारती क़ाफले इसी रास्ते से

शाम जाया करते थे। चूँकि शाम से तिजारती ताल्लुक़ात पर मक्का वालों की माली खुशहाली का बहुत कुछ दारोमदार था इसलिए अल्लाह के रसूल (स॰) का मदीना को मरकज़ बना लेना उनके लिये बड़ा मसअला बन गया और उनके सामने इसका हल जंग के सिवा और कुछ न था लेकिन इस बड़े समझदार ने दुश्मन की फ़िक्र और एकजुटता की मज़बूती की बुनियादें पहले ही खोखली कर दी थीं और साथ ही मुसलमानों को अब पूरी तरह तैयार भी कर लिया था। जो आपस में भाईचारगी और इत्तेहाद व इत्तेफाक़ के बेपनाह शौक़ में डूबे हुए थे और जिसमें से हर एक रसूल (स॰) के मामूली इशारे पर अपना आख़री ख़ून का क़तरा तक बहा देने के लिये तैयार रहता था।

मुसलमानों की मिसाली एकजुटता और तैयारी के साथ आपने मदीने और आसपास के यहूदी क़बीलों को भी काफ़ी ढील देकर अपने साथ ले लिया या कम से कम उनकी मुख़ालेफत के ज़ोर को तोड़ दिया। मक्का से लेकर मदीने तक इस्लाम और मुसलमानों की तारीख़ का यह शुरुआती नक़शा नबी करीम (स॰) की पाक हस्ती का बनाया हुआ था जो वह्य व इल्हाम की रौशनी में आपकी बड़ी समझ का नतीजा था जिसका पहला असर यह हुआ कि 2 हिजरी में बद्र के मैदान में कुछ गिन्ती के निहत्थे मुसलमानों ने कुरैश की टिड्डी दल फौज को ठिकाने लगा दिया और इस बुरी तरह हराया जिसे तारीख़ कभी नहीं भुला सकती हालांकि इस जंग में मुसलमानों ने यहूदियों या किसी दूसरी क़ौम से किसी तरह की भी माली, फन्नी या किसी और तरह की कोई मदद नहीं ली थी बेशक रसूल (स॰) बहुत बड़ी समझ वाले थे और आपकी समझदारी इन्सानी नस्ल के लिए एक अलग तरह की मिसाल है। □□□

(बक़िया..............नबी (स॰) की ज़िन्दगी की झलकियाँ) आप ख़ुद भी क़ानून पर चलते थे और दूसरों को भी क़ानून तोड़ने की इजाज़त नहीं देते थे। कुर्आन गवाह है कि जिन उसूल व क़ानून पर सभी लोग चलते थे रसूल (स॰) भी सख़्ती के साथ उसी क़ानून पर चलते थे।

जब बनी कुरैज़ा की जंग में मुसलमानों की जीत हुई और दुश्मनों को गिरफ्तार कर लिया गया उस वक़्त बहुत बड़ी तादाद में सोना, चाँदी और माल व दौलत मिला तो कुछ बीवियों ने इस बात की चाहत की कि अगर कुछ माल दे दें तो बेहतर होगा। रसूल (स॰) ने मना कर दिया और नाराज़गी की वजह से एक महीने तक बीवियों से दूरी इख़्तियार कर ली। जिस पर सूरा 'अह्ज़ाब' की आयतें गवाह हैं।

जब आप ने मक्का को जीत लिया तो फिर किसी का डर नहीं था इसलिए आपने अबुसुफयान और इस जैसे बहुत से सरदारों के साथ भी अच्छा सुलूक किया। बहरहाल यह आप के हुकूमती अख़लाक़ के कुछ नुमाया पहलू थे कि जो जिस का हक़दार था उसके साथ वैसा ही सुलूक किया। दुश्मन की चालों के मुक़ाबले में होशियार, मोमिन के लिये झुकने वाले और अल्लाह के हुक्मों के सामने झुकने वाले, मुसलमानों के मामलों में बहुत कोशिश करने वाले थे।

ऐ खुदा! हम तुझसे दुआ करते हैं कि हमको पैग़म्बर की उम्मत वाला बना दे हमें इस बड़ी मुहब्बत व उलफत के साथ दुनिया से उठा ले और क़यामत के दिन अपने नबी (स॰) की ज़ियारत से हमको महरूम न करना। □□□

मेराजे रसूल (स॰)

डाक्टर सै0 कल्बे सादिक़ साहिब

''बहुत मुबारक है वह ज़ात कि जिसने अपनी बन्दे पर कुर्आन नाज़िल किया ताकि वह हमारे अज़ाब से डराने वाला बने, किसके लिए, आलमीन के लिए'' (सूरा फ़ुरक़ान आयत–1)

मैं यह कहता हूँ कि किसी मुसलमान को इन आयतों में और आयतों के तर्जुमे में शक तो नहीं? और अगर शक नहीं तो फिर हर मुसलमान भाई के सामने एक सवाल रखता हूँ और वह सवाल यह है कि जब हुज़ूर आए हैं सारी दुनियाओं के लिए तो हुज़ूर की सारी ज़िन्दगी इस छोटी सी दुनिया में क्यों महदूद रह गई?

यह ज़मीन जिस पर आप बैठे हुए हैं इसको आप जितना बड़ा समझें, इसकी हैसियत ही क्या है? यह काएनात में एक ज़र्रे से ज़्यादा की हैसियत नहीं रखती। आप इसको जितना चाहें बड़ा समझें, आप Astronomy और Cosmology पढ़े तो आपको मालूम होगा कि यह सूरज ज़मीन से लाखों गुना बड़ा है और इसका निज़ामे शमसी अरबों मील में फैला हुआ है। मगर हमारे हिसाब से यह अरबों मील तक फैला हुआ निज़ाम भी काएनात के नक़्शे में इतना बड़ा भी नहीं कि एक नुक़्ता रख कर इसकी तरफ इशारा किया जा सके। तो जब पूरा निज़ामे शमसी Solar System इतना छोटा है तो इसमें इस नन्हीं मुन्नी ज़मीन की हैसियत ही क्या? मुरसले आज़म (स॰) आए तो थे सारे जहानों के लिए और रह गये एक छोटी सी ज़मीन के ऊपर। यह तो कोई उसूल की बात नहीं हुई।

आप इस मुल्क में तशरीफ फरमा हैं। यह लम्बा चौड़ा मुल्क कैलिफोरनिया से लेकर न्युयार्क तक फैला हुआ है। इसे पार करने में सीधी उड़ान से भी 6 घण्टे लगते हैं। यहाँ के राष्ट्रपति है मिस्टर रीगन। तो क्या मिस्टर रीगन राष्ट्रपति चुने जाने के बाद से व्हाइट हाउस के बाहर नहीं निकले हैं और क्या उनको ज़ेब देता है कि सारे मुल्क के राष्ट्रपति बनें और व्हाइट हाउस में घूम फिरकर रह जाएँ। यह ऐसा कभी हुआ है और न ऐसा कभी हो सकता है। हर सरबराह अपने मुल्क में घूमता रहता है। इसीलिए आप देख लें मिस्टर रीगन को, आज वह लास ऐंजिल्स में हैं कल फलाडलफिया में, दो दिन के बाद न्युयार्क में हैं फिर ह्युस्टन में।

अब मैं सारे मुसलमानों से पूछना चाहता हूँ कि हुज़ूर (स॰) आए तो थे सारे जहानों के लिए और रह गये इस दुनिया के अन्दर। यह बात कुछ समझ में आने वाली नहीं है। इस ज़मीन की तो कोई हैसियत ही नहीं, यह तो ज़ीरो है, सिफर है। बस याद रखिये कि अगर हम हुज़ूर के मेराजे जिस्मानी को नहीं मानेंगे तो इस सवाल का जवाब नहीं दे सकते। इसीलिए किसी नबी को मेराज नहीं मिली, किसी रसूल को मेराज नहीं मिली मगर हुज़ूर को मेराज मिली। काएनात की सैर कराई गई बल्कि मालूम काएनात के बहुत आगे तक हुज़ूर (स॰) को ले जाया गया और

इसका ज़िक्र कुर्आन में भी कर दिया गया कि यह हक़ीक़त शक व शुब्हे से बाला तर रहे। तारीख़ को मशकूक क़रार दिया जा सकता है, कुर्आन को नहीं। इसीलिए 15वें पारे में इरशाद कर दिया गयाः

मुझे मालूम है कि यहाँ पर भी बहस पैदा कर दी गई है। कुछ भाई कहते हैं कि पैग़म्बर (स॰) को जिस्मानी मेराज नहीं हुई थी पैग़म्बर (स॰) का जिस्म नहीं गया था मेराज में, बल्कि पैग़म्बर (स॰) ने सिर्फ एक ख़्वाब देखा था। मैं किसी पर कोई तनक़ीद नहीं करता। लेकिन यह भी हक़ीक़त है कि जब कोई क़ौम या कोई फर्द एहसासे कमतरी का शिकार होती है तो उसको नीचे–नीचे देखने की आदत हो जाती है। इस एहसासे कमतरी की वजह से हमको इतना नीचे देखने की आदत है कि रसूल (स॰) अपने जिस्म को इतना ऊँचा उठा रहे हैं, हम नज़र नहीं उठा पा रहे हैं।

अब से कोई दस बारह साल पहले की बात है एक सच्चा वाक़ेआ सुना दूँ, उस वक़्त लखनऊ में टी0वी0 नहीं आया था। अब यह बीमारी वहाँ भी आ गई है। दिल्ली में टी0वी आ चुका था। लखनऊ के कुछ लोग यहाँ मौजूद हैं, उन्हें मालूम है कि लखनऊ में जो ज़ौक़ और शौक़ और ''बाज़ियाँ'' फैली हुई हैं, उनमें कबूतरबाज़ी भी है। ख़ास तौर पर पुराने लखनऊ में बहुत कबूतर उड़ते दिखाई देंगे और इसी तरह हर दो चार घरों के बाद छत पर बाँस की छतरी लगी हुई दिखाई देगी। ख़ुदा मालूम वह कबूतरों के बिठाने के लिए होती हैं या कबूतरों को पकड़ने के लिए? मुझे पता नहीं, लेकिन यह ज़रूर है कि दो चार घरों के बाद आपको वह छतरी दिखाई दे जाएगी। अब मैं इत्तेफाक़ से गया देहली, लखनऊ के एक साहबज़ादे मेरे साथ देहली तशरीफ ले गये, उस वक़्त देहली में टेलीवीज़न आ चुका था। मैं एक होटल में ठहरा गर्मी का ज़माना था, मैं ऊपरी खुली छत पर सो रहा था, वह साहबज़ादे भी उसी छत पर सो रहे थे। सुबह जब आँख खुली तो उन्होंने खुली और बलन्द छत से चारों तरफ नज़र दौड़ाई और फिर मुसकुरा कर फरमाने लगे जनाब यहाँ तो माशा अल्लाह लखनऊ से भी ज़्यादा कबूतरबाज़ हैं। मैंने कहा आपको कैसे पता चला? कहने लगे देखिये कितनी छतरियाँ यहाँ दिखाई दे रही हैं। मैंने कहा, भैय्या यह छतरियाँ नहीं, यह टेलीवीज़न के ऐण्टीना हैं।

देखा आपने! इनको कबूतर की छतरियाँ ही देखने की आदत थी इस लिए टेलीवीज़न का एण्टीना भी उन्हें कबूतर की छतरी ही दिखाई दिया। तो मुसलमानों को ख़्वाब देखने की ऐसी आदत हो गई है कि रसूल (स॰) की मेराज भी ख़्वाब ही दिखाइ दे रही है। आप देखिये, ख़ुद अल्लाह फरमा रहा है कि ''सुब्हानल्लज़ी'' आप सुब्हानल्लाह कब कहते हैं? अलहम्दुलिल्लाह! आपके सुब्हानल्लाह का मेयार बहुत बलन्द है। जब ऐसी ही कोई बात आपको पसन्द आती है तो आप सुब्हानल्लाह कहते हैं। लेकिन मैंने ख़ुद कभी अपने किसी नुक्ते पर सुब्हानल्लाह कहा? नहीं क्योंकि नुक्ता है ही नहीं इस लायक़ कि मैं सुब्हानल्लाह कहकर जैसे अपनी तारीफ ख़ुद करूँ। अब ज़रा ग़ौर कीजिये कि काएनात का पैदा करने वाला, उस के नज़दीक नबी (स॰) की मेराज कितना ज़बरदस्त कारनामा है कि जब मेराज का ज़िक्र आता है तो ख़ुद अपनी तारीफ करता है ''सुब्हानल्लज़ी'' सुब्हानल्लाह हमारी क्या क़ुदरत है कि हम नबी (स॰) को फर्श से अर्श

पर ले गये।

मगर कुछ मुसलमान ऐसे भी हैं जो इसके बाद भी कहते हैं कि हुज़ूर ने ख़्वाब देखा था। तो क्या पैग़म्बर ने कहा था कि मैंने ख़्वाब देखा था? हरगिज़ नहीं। मैं पूरी ज़िम्मेदारी के साथ आपके सामने यह कह रहा हूँ कि शीआ, सुन्नी, जितनी रिवायतें हैं सब को खंगाल मारिये, एक मन्ज़िल पर भी रसूल (स.) यह कहते हुए नहीं दिखाई देंगे, ''मैंने ख़्वाब देखा था''। रसूल (स.) मेराज की तफसील बयान करते हुए दिखाई देंगे कि यह हुआ, यह हुआ, यह हुआ। कभी न कहा कि मैंने ख़्वाब देखा था। यहाँ तक कि दुनिया से रुख़सत होते हुए भी हुज़ूर (स.) ने यह नहीं कहा कि मैंने ख़्वाब देखा था।

अब एक क़िस्सा मैं अपना सुना दूँ। जब तक तक क़िस्सा पूरा न हो जाए आप मेरे बारे में कोई राय न क़ायम कीजियेगा। अमरीका तो मैं हर साल जाता रहता हूँ मगर पिछले साल मेरे साथ यह वाक़ेआ हुआ कि रूस के राष्ट्रपति का मेरे पास पैग़ाम आया कि तुम हर साल अमरीका का दौरा करते रहते हो, एक बार रूस का भी दौरा कर लो। मैंने कहा, मेरे पास तो टिकट–विकट है नहीं न इतने पैसे हैं तो जनाब उन्होंने वहाँ से एक चार्टरड प्लेन मेरे लिये भेज दिया। बहुत इज़्ज़त व एहतेराम से बुलाया गया। मैंने रूस के मशहूर मक़ामात का दौरा किया, रूसी राष्ट्रपति से भी मेरी बा क़ायदा आमने–सामने बैठ कर बात हुई। देखा आप ने, मैं आपको सुना रहा हूँ सफर की दास्तान और आपको यह ख़याल कि रूस कम्युनिस्ट मुल्क, हुकूमत, मज़हब–दुश्मन, यह कैसे वहाँ बुलाए गए, बहर हाल आपने यहाँ के अख़बारों में छपवा दिया, हमारे मोलवी साहब रूस के राष्ट्रपति की दावत पर वहाँ गये थे और उन्होंने उनके आमने–सामने बैठ कर बातचीत की। और अगले साल मैं फिर यहाँ आया तो जनाब इण्टरव्यु लेने के लिए मुख़्तलिफ अख़बारों के नुमाइन्दे मेरे सामने खड़े थे कि साहब वहाँ आप कैसे चले गये थे? बताइये आपसे क्या बात हुई, कैसे बातचीत हुई? किन मसाएल पर बहस हुई? जब उन्होंने मुझ से सवाल करना शुरु किये तो मैं ने मुसकुरा कर कहा कि जनाब मैंने सारा वाक़ेआ यहाँ बयान किया था सिर्फ एक जुमला कहना भूल गया था कि मैंने ख़्वाब देखा था। बताइये आपकी क्या राय होगी मेरे बारे में। आप कहेंगे कि अजीब नामाकूल आदमी हैं यहाँ हमने इतना मश्हूर कर दिया, अख़बारों में दे दिया, इण्टरव्यु होने के सामान तैयार हो गये, टी0वी0 कैमरे सामने लगे हुए हैं। अब साल भर के बाद इनको याद आ रहा है तो कह रहे हैं मैंने ख़्वाब देखा था तो शायद लास एंजिल्स में मुझे फिर आना नसीब न हो। तो मैं बदनसीब आपके सामने साल भर के बाद कह भी रहा हूँ कि मैंने ख़्वाब देखा था और हुज़ूर (स.) दुनिया से रुख़सत हो गये और यह नहीं कहा कि मैंने ख़्वाब देखा था तो अब बताइये, हुज़ूर (स.) की कौन सी बताई हुई बात एतेबार के क़ाबिल रह गई।

अब हुज़ूर (स.) जन्नत की तारीफ करेंगे मैं कहूँगा हुज़ूरयह भी ख़्वाब देखा होगा, जहन्नम की दास्तान बयान करेंगे मैं कहूँगा मुमकिन है हुज़ूर ने यह भी ख़्वाब देखा होगा तो इसका मतलब यह कि हुज़ूर ख़्वाब नहीं देख रहे, असल में हम ख़ुद ख़्वाब देख रहे हैं।

बस अज़ीज़ भाईयों! याद रखें मेरे अज़ीज़ मुसलमान भाई। हर नबी को उस ज़माने के

मुताबिक़ मोअजिज़ा दिया गया। हज़रत मूसा (अ.) के ज़माने में जादू का ज़ोर था वैसा ही मोअजिज़ा दे दिया गया। हज़रत ईसा (अ.) के ज़माने में मेडिकल साइंस का, डाक्टरी का ज़ोर था, वैसा मोअजिज़ा दिया गया। तो मुसलमानों से मैं पूछना चाहता हूँ कि हुज़ूर (स.) का ज़माना क्या है। अगर हुज़ूर (स.) का ज़माना वही था जो चौदह सौ बरस पहले था तो मुझे कुछ नहीं कहना है। अगर मुसलमान कहते हैं कि हुज़ूर का ज़माना क़यामत तक है तो फिर हुज़ूर को ऐसा मोअजिज़ा मिलना चाहिए था जो हज़ारों बरस बाद आने वाले ज़माने के मुताबिक़ हो। आज के ज़माने की ख़ुसूसियत क्या है। इस ज़माने की ख़ुसूसियत है तेज़ रफ्तारी और ख़लाओं में तैरना और दूसरे Planets सैय्यारों पर। तो फिर याद रखिये हुज़ूर (स.) भी क़यामत तक के लिए रसूल बनाकर भेजे गये थे इसलिए क़यामत तक के ज़माने को नज़र में रखने के बाद एक मोअजिज़ा ऐसा दे दिया गया कि तुम्हारे ख़लाई जहाज़ चाहे जितनी ही तेज़ रफ्तारी इख़्तियार कर लें मगर हमारे नबी (स.) के पैरों की गर्द तक भी न पहुँच सकोगे।

लोग कहते हैं कि इतनी जल्दी कैसे चले गये, सिरे पर निकल गये काएनात के, ऊपर निकल गये। यह कैसे हो सकता है कि काएनात को पार कर लिया और बिस्तर गर्म रहा, दरवाज़े की ज़न्जीर भी हिलती रही और वापस भी आ गये। यह इमकान में नहीं है। सब कुछ फिक्शन है, कहानी है, ड्रामा है। सब अफसाना इसलिए आपकी समझ में आ रहा है कि आप यह समझते हैं कि हम यह कहते हैं कि पैग़म्बर गये। हालांकि न मैंने कभी कहा कि पैग़म्बर गये और न कभी क़ुर्आन ने कहा कि पैग़म्बर गये। क़ुर्आन ने भी कहा और मैं भी कह रहा हूँ, ख़ुदा ले गया। तो अब अगर ख़ुदा की कोई बात आपकी समझ में आ गई हो तो यह बात भी मैं आपको समझा दूँ। जहाँ तक मेरा इमकान है, मैं चाहता हूँ कि बात Clear हो जाए, साफ हो जाए।

अज़ीज़ भाईयों! आवाज़ की एक रफ्तार है। आप एक सौ गज़ के फासले पर खड़े हो जाएँ। मैं यहाँ खट से करूँगा तो एक सेकेण्ड के बाद वहाँ आपको आवाज़ सुनाई देगी। यह है आवाज़ की रफ्तार। क्या वह बारह सौ मील तक़रीबन एक घण्टो में सफर करती है? और मैं यहाँ रेडियो पर तक़रीर कर रहा हूँ और यहाँ से दस ग्यारह हज़ार मील के फासले पर हैं लखनऊ तो ठीक उसी लम्हे यह आवाज़ सुनाई दे रही है, तो यह कैसे सुनाई दे रही है? इसको तो कई घण्टे में वहाँ पहुँचना चाहिए था। तो आप कहेंगे कि आवाज़ की रफ्तार तो कम है मगर हमने तुम्हारी ज़बान से निकले हुए अलफाज़ को एक तेज़ रफ्तार सवारी पर सवार कर दिया और इस तेज़ रफतार सवारी का नाम है रेडियाई लहर। तो अब ये तुम्हारी आवाज़ नहीं जा रही है बल्कि यह तेज़ रफ्तार रेडियाई लहर तुम्हारी आवाज़ को ले जा रही है। तुम्हारी आवाज़ वहाँ तक नहीं जा सकती थी, अगर पहुँच भी जाती तो 12–14 घण्टे में पहुँचती मगर हमने तुम्हारी ज़बान से निकले हुए जुमलों को रेडियाई लहर की तेज़ रफ्तार सवारी पर सवार कर दिया तो वही फासला एक सेकण्ड के भी सोलहवें हिस्से में तै हो गया।

देखा आपने, इसका मतलब यह कि आप पैग़म्बर की यह हैसियत इन्सान की सुस्त रफ्तारी को देख रहे हैं और वहाँ अल्लाह यह फरमा रहा है यह गए नहीं बल्कि हमारी ताक़त थी कि हम

इनको ले गए। अब अल्लाह की ताक़त क्या है वह भी आपके सामने मैं अर्ज़ कर दूँ। आपके सामने न कहूँ तो किसके सामने कहूँ। जनाब आज की दुनिया में जो सबसे ज़्यादा तेज़ रफ्तार चीज़ मानी जाती वह है रौशनी की रफ्तार। मगर इस काएनात में आप अपनी मालूमात के एतेबार से रौशनी की रफ्तार को चाहे जितना तेज़ समझें जो तक़रीबन दो लाख मील कम से कम एक सकेण्ड में तय कर लेती है। अल्लाहु अक्बर! कितनी तेज़ रफ्तार रौशनी की रफ्तार कि एक सेकण्ड में दो लाख मील कम से कम। लेकिन काएनात इतनी बड़ी है भाई साहब कि यह रफ्तार भी चींटी की रफ्तार है। काएनात को तय करने के लिए काएनात में सबसे ज़्यादा अगर कोई तेज़ रफ्तार है तो वह कशिशे सक़्ल (गुरुत्वाकर्षण बल) की लहरें हैं, जो काएनात की दूरी, रौशनी दो लाख मील फी सेकण्ड की रफ्तार से करोड़ों साल में भी तय नहीं कर सकती मगर जो कशिशे सक़्ल (गुरुत्वाकर्षण बल) की लहरें है उनकी रफ्तार इतनी तेज़ है कि एक सेकण्ड के दसवें हिस्से में काएनात के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में यह लहरें पहुँच जाती हैं। जब अल्लाह कशिशे सक़्ल (गुरुत्वाकर्षण बल) की लहरों को रफ्तार दे सकता है तो अल्लाह की मर्ज़ी काएनात के मरकज़े सक़्ल हुज़ूर करीम (स॰) को यह रफ्तार दे दे तो हैरत की क्या बात है?

हैरत की बात तो यह है कि हुज़ूर मेराज की मन्ज़िल में तशरीफ ले गये और जब पलट कर आए तो अली बिन अबी तालिब ने फरमाया कि हुज़ूर (स॰) मेराज का हाल आप बयान करेंगे या मैं बयान करूँ। और फिर वाक़ई पूरी तफसील बयान भी कर दी। इस मन्ज़िल पर कुछ लोगों को ग़लतफहमी हो जाती है और होना भी चाहिए कि वह यह समझते हैं कि चूँकि हम अली (अ॰) से मुहब्बत करते हैं इसलिए जहाँ कोई मन्ज़िल आई हम हमेशा अली (अ॰) को आगे बढ़ा देते हैं।

मैं अर्ज़ करता हूँ कि हम कभी अली (अ॰) को रसूल (स॰) से आगे नहीं बढ़ाते हाँ सिर्फ एक जगह बढ़ा देते हैं, बाक़ी हर जगह रसूल (स॰) को आगे रखेंगे। वह एक जगह कि जहाँ अली (अ॰) को आगे बढ़ाएंगे वह है मैदाने जंग। मैंदाने जंग में रसूल (स॰) को पीछे रखेंगे अली (अ॰) को आगे बढ़ा देंगे। तो यह अली (अ॰) को बढ़ाना नहीं तो और क्या है कि जो कुछ रसूल (स॰) ने वहाँ जाकर देखा वही अली (अ॰) ने बैठे–बैठ यहाँ देख लिया। अजी यहाँ तो समझाना दो मिनट की बात है, यहाँ कौन सी मुश्किल बात है। मैं यहाँ बैठता हूँ लास एंजिल्स में। थोड़े फासले पर यहाँ से केपकनावरल है जहाँ से ख़लाई जहाज़ चाँद पर जाते रहते हैं। वहाँ से कुछ ख़लाबाज़ चले चाँद का सफर करने के लिये। मैं यहाँ पर बैठा हुआ उनकी फिल्म देख रहा हूँ। कैसे गए, कैसे ख़ला में पहुँचे, कैसे ज़मीन का तवाफ किया, कैसे चाँद की तरफ रवाना हुए, कैसे चाँद पर उतरे, कैसे चाँद से फिर रवाना हुए। यह सब मन्ज़र मैं टी0वी0 पर देख रहा हूँ। इसके बाद मैंने देखा वह आकर फिर समुन्द्र में उतरे फिर जनाब उनको उठाया गया और जहाज़ में रखा गया। अब वह जहाज़ उनको लेके चला। अब जहाँ वह जहाज़ से आने वाले थे वहीं का टिकट मैंने भी लिया प्लेन का। जब वह वहाँ उतरे जहाज़ से तो मैंने उनसे हाथ मिलाया और कहा, हुज़ूर! चाँद पर जाने का वाक़ेआ आप बयान करेंगे या मैं बयान कर दूँ? क्या मैं उनसे आगे बढ़ गया! अरे वह,

वह हैं और मैं, मैं हूँ। मगर जो उन पर गुज़र रही थी वह सब मैं देख रहा था। तो मैं उनसे आगे नहीं बढ़ा वह मुझसे आगे हैं। तो अज़ीज़ भाइयों! अगर बरक़ी लहरों के वसीलों से मुझे चाँद पर जाने वालों की मेराज का मन्ज़र दिखाया जा सकता है ज़मीन पर बैठे–बैठे तो अगर रूहानी लहरों से अली बिन अबी तालिब (अ॰) पैग़म्बर (स॰) की मेराज का हाल देख रहे हैं तो इसमें कौन सी बड़ी बात है।

दास्तान तो बहुत लम्बी है लेकिन बस इतना और सुन लीजिये। तशरीह कर दूँ मेरे अहलेसुन्नत भाई जो यहाँ तशरीफ रखते हैं, ज़रा ग़ौर से सुनें मैं कभी किसी के दिल को तोड़ा नहीं करता, न कभी ख़िलाफे तहज़ीब कोई बात किया करता हूँ। लेकिन यह और तरह की बात है। अगर उनको मुझ पर भरोसा है तो भरोसा फरमा लें, अगर मुझ पर भरोसा नहीं है तो अपने किसी आलिम से पूछ लें। मैं ज़ाती ज़िम्मेदारी पर आप से कह रहा हूँ कि जब आप तजज़िया करेंगे कि कुछ मुसलमानों को यह ग़लतफहमी क्यों हो गई कि हुज़ूर (स॰) की मेराज जिस्मानी नहीं हुई बल्कि ख़्वाब देखा था तो इसकी जड़ में क़ाबिले ज़िक्र बस एक रिवायत है उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा की। वह मुअज़्ज़मा यह फरमाती नज़र आती हैं कि शबे मेराज पैग़म्बर का जिस्म मेरे जिस्म से जुदा नहीं हुआ। अब ज़ाहिर है कि मुसलमान इस बीबी की बात को कैसे झुठला सकते हैं जो उनकी नज़र में सिद्दीक़ा हों। इस बुनियाद पर कुछ मुसलमान यह कहने लगे कि पैग़म्बर (स॰) को मेराज हुई थी मगर रूहानी, यानी पैग़म्बर (स॰) ने ख़्वाब देखा था। उनका जिस्म बीबी के पहलू ही में रहा था।

मैं अपने मुसलमान भाईयों से पूरे अदब के साथ यह अर्ज़ करता हूँ कि इस रिवायत को अपने यहाँ से खुरच कर फेंक दें, अगर अपने पैग़म्बर (स॰) की इज़्ज़त चाहते हैं वरना अगर यह रिवायत यूरोपियन स्कालरों तक पहुँच गई तो और मुसीबत खड़ी हो जाएगी। अफसोस सद अफसोस कि मुसलमान ज़रा भी ग़ौर नहीं करते। अरे पैग़म्बर (स॰) को मेराज कहाँ से हुई? कुर्आन पढ़िये कुर्आन की लफ्ज़े हैं कि मक्का से मेराज हुई है हिजरत से पहले, हिजरत से पहले मक्का की ज़मीन से पैग़म्बर (स॰) को मेराज हुई, यह कुर्आन कह रहा है। और जिस बीबी की तरफ आप इस रिवायत को मन्सूब कर रहे हैं वह पैग़म्बर के पहलू में हिजरत के बाद मदीने में तशरीफ लाईं, वह उस साल रसूल (स॰) के पहलू में थीं ही कहाँ जो यह फरमतीं कि पैग़म्बर मेरे पहलू से जुदा नहीं हुए।

तो एक रिवायत मिलती है और इसका हासिल यह है कि पैग़म्बर को मेराज हुई मक्का से हिजरत से पहले, और हिजरत के बाद पैग़म्बर के घर में यह बीबी तशरीफ लाईं। मगर ऐसा मालूम होता है कुछ लोगों को इतनी जल्दी है पहुँचा देने की कि वह मक्का में ही पहुँचाए दे रहे हैं। लेकिन भाईयो! ज़रा सोचिये ज़रा ग़ौर कीजिये, कितनी बुरी बात है। कहीं यूरोपियन स्कालरों को ख़बर हो गई तो एक और मुसीबत खड़ी हो जाएगी, लेने के देने पड़ जाएँगे। मुसलमानों की रिवायतों का यह आलम कि रिवायत गढ़ने पर आते हैं तो कुछ भी याद नहीं रहता......झूठे का हाफिज़ा कमज़ोर होता है। इनको यह भी याद नहीं रह गया कि यह बीबी मक्का में थीं भी या नहीं।

बस अज़ीज़ भाईयों! मैं कहता हूँ कि

पैग़म्बर के लिए शायान शान था कि इनको इस मन्ज़िल पर बुला लिया जाए कि जहाँ या पैदा करने वाला हो या पैदा होने वाला हो, बन्दा हो या ख़ुदा हो, या ख़ालिक़ हो या मख़लूक़ हो। बात की वज़ाहत के लिए एक मिसाल दे दूँ। इस हाल में आप पूरा अन्धेरा कर दीजिये बस दो एक बल्ब रौशन रहने दीजिये। फिर एक प्लेट फर्श पर रख दीजिये छोटी प्लेट एक डेढ़ बालिश्त की। मैं आपसे पूछूँगा कि इस प्लेट का साया कितनी दूर तक पड़ रहा है? आप कहेंगे कि जितनी बड़ी प्लेट है उतना ही साया है। मैं कहूँगा एक फिट आप इसे ऊँचा कीजिये तो प्लेट उतनी ही बड़ी रही मगर उसका साया थोड़ा फैल गया, मैंने कहा ज़रा और उठाइये, आपने और उठाया, प्लेट तो उतनी ही बड़ी रही, प्लेट को बल्ब से मिला दिया तब जहाँ–जहाँ तक पहले उस बल्ब की रौशनी फैल रही थी वहाँ–वहाँ तक उस प्लेट का साया फैल जाएगा। अज़ीज़ भाईयों! याद रखिये कि अल्लाह ने अपने लिये कहा रब्बुलआलमीन और उनके लिये कहा रहमतुल लिलआलमीन। यानी जहाँ तक उसकी ख़ुदाई का दायरा है वहाँ उनकी रहमत का साया है। इसलिए ज़रूरी था कि उनको इस बुलन्द मन्ज़िल तक ले आया जाए कि जहाँ बन्दे और ख़ुदा के बीच से सारे फासले ख़त्म हो जाएँ कि जहाँ–जहाँ तक उसकी ख़ुदाई का दायरा था वहाँ–वहाँ तक उसकी रहमत का साया फैल जाए।

बस अज़ीज़ भाईयों! यह है पैग़म्बर (स०) की मेराज का मुख़तसर सा बयान। मगर याद रखिये कि पैग़म्बर (स०) के जिस्म की मेराज अर्श पर चन्द लम्हों के लिए थी मगर किरदार की मेराज ज़मीन पर ज़िन्दगी भर रही। एक नफ्सियाती बात अर्ज़ कर दूँ जो कमो बेश तमाम इन्सानों में पाई जाती है कि अगर वह मेहमान हो जाए किसी ऐसी ज़ात का जो बहुत अज़ीम हो, तो उसके मिज़ाज में एक तरह की बड़ाई का एहसास पैदा हो जाता है। सलाम के जवाब तक में दुश्वारी होती है। यह होता है कि नहीं? अब आप ज़रा इन्साफ से बताईये कि पैग़म्बर (स०) तशरीफ ले गए उस मन्ज़िले अक़दस पर, अल्लाह के मेहमान हुए जहाँ सिवाए नूर के और कुछ नहीं, जहाँ मुहब्बतों भरी बातें हुईं, जहाँ आवाज़ें आ रही हैं कि क़रीब आओ और क़रीब आओ। कौन बुला रहा है, ख़ालिक़े काएनात, मालिके काएनात, अब ग़ौर कीजिये, काएनात के ख़ालिक़ का मेहमान बन कर ज़मीन पर आया तो उसको कौन सा मक़ाम मिला? यहाँ इसको ढेले मारे जा रहे हैं, यहाँ इसको पत्थर मारे जा रहे हैं, यहाँ इसकी राह में काँटे बिछाये जा रहे हैं। ख़ुदा की क़सम! अगर मामूली इन्सान होता तो उसको महोल में Adjust करना मुमकिन न होता मगर जब इसको पत्थर मारे गये तो पत्थर मारने वालों को सीने से लगा लिया। उसको ग़ालियाँ दी गईं तो गालियाँ देने वालों को दुआएँ दीं। जब उसकी राह में काँटे बिछाये गए तो राह में काँटे बिछाने वालों की मुश्किलों को हल कर दिया।

याद रखिये, वह जिस्म की मेराज है और यह रूह की मेराज है। मैं भी पैग़म्बर (स०) की मेराजे रूहानी का क़ायल हूँ मगर वह ख़्वाब नहीं मेराजे किरदार है। पैग़म्बर के जिस्म की मेराज को देखना हो तो वहाँ देखो, किरदार की मेराज में देखना है तो यहाँ देखो।

(क़ुर्आन और साइंसः मजमूअए तक़ारीर)



वज्हे तख़्लीक़े दो आलम मुरसले आज़म (स.)

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़्वी

''ऐ रसूल (स.) अगर आप न होते तो काएनात में कुछ न होता''।

इसका मतलब यह है कि काएनात में जो पैदा हुआ है वह हमारे रसूल (स.) के तुफ़ैल में पैदा हुआ है। यूँ अर्ज़ करूँ कि यह आसमान का जो शामियाना है वह चूँकि हमारे रसूल (स.) तशरीफ लाने वाले थे इसलिए लगाया गया गया यह ज़मीन का फर्श है वह इसलिए बिछाया गया क्योंकि रसूल (स.) तशरीफ लाने वाले थे यह चाँद व सूरज व सितारों के ज़रिये से जो रौशनी की गई वह इसलिए की गई क्योंकि रसूल (स.) तशरीफ लाने वाले थे चूँकि एक अज़ीम मेहमान एक इज़्ज़तदार मेहमान आने वाला था इसलिए क़ुदरत ने यह एहतेमाम किया कि आसमान का शामियाना लगाया ज़मीन का फर्श बिछाया चाँद सूरज व सितारों से रौशनी का इन्तिज़ाम किया जब तमाम इन्तिज़ामात हो चुके तब रसूल (स.) ज़मीन पर तशरीफ लाए तो मालूम हुआ कि आसमान का शामियाना रसूल (स.) की वजह से यह ज़मीन का फर्श रसूल (स.) की वजह से यह चाँद सूरज व सितारों की पैदाइश रसूल (स.) की वजह से क्योंकि वह ज़मीन पर तशरीफ लाने वाले थे इसलिए इन तमाम चीज़ों का एहतेमाम किया गया तो अब मैं पूछना चाहता हूँ कि जब कोई मुअज़्ज़ज़ मेहमान आता है कोई मुकर्रम मेहमान आता है उसके लिए हम एहतेमाम करते हैं शामियाना लगता है फर्श का इन्तिज़ाम होता है रौशनी का इन्तिज़ाम होता है कब तक? जब तक वह मेहमान मौजूद रहता है फर्श का इन्तिज़ाम रहता है शामियाने का इन्तिज़ाम रहता है रौशनी का इन्तिज़ाम रहता है क्योंकि इसकी वजह से यह इन्तिज़ाम किया गया है लेकिन इधर वह मेहमान गया उधर फर्श समेट लिया जाता है शामियाना उतार लिया जाता है लाइटें बुझा दी जाती हैं तो मैं पूछना चाहता हूँ कि यह ज़मीन का फर्श इसलिए बिछा कि रसूल (स.) आने वाला था यह आसमान का शामियाना इसलिए कि रसूल (स.) तशरीफ लाने वाले थे या चाँद सूरज की रौशनियाँ इसलिए कि रसूल तशरीफ लाने वाले थे तो होना तो यह चाहिए था कि जब रसूल (स.) तशरीफ ले गये तो ज़मीन का फर्श समेट लेता आसमान का शामियाना उतर जाना चाहिए था चाँद व सूरज की लालटैनें बुझ जानी चाहिए थीं यह तमाम चीज़ें अपनी जगह इसी तरह बाक़ी रहना इस बात का सुबूत है कि कोई हो न हो मुहम्मद (स.) जैसा आज भी मौजूद है।

कोई बिलकुल रसूल (स.) जैसा आज भी मौजूद है जिसके तुफ़ैल में यह ज़मीन भी क़ायम है यह आसमान भी क़ायम है यह चाँद सूरज भी क़ायम हैं।

इस से पहली उम्मतों पर आप तारीख़ उठाकर देखें पता नहीं कितनी उम्मतें हैं जिन पर अज़ाब नाज़िल हुआ फना हो गयीं ख़त्म हो गयीं अज़ाब नाज़िल हुआ अल्लाह की तरफ से कभी ज़मीन का तख़्ता पलट गया और पूरी उम्मत फना हुई। कभी कोई अज़ाब नाज़िल हुआ। कभी बीमारियों के ज़रिये से कभी वबाओं के ज़रिये से और वह उम्मत मिट गई लेकिन आप याद रखें कि वैसा अज़ाब कभी मुसलमानों पर नाज़िल नहीं होगा जो इससे पहले उम्मतों पर नाज़िल हुआ। नहीं होगा क्यों? क्योंकि क़ुर्आन का एलान है किसी भी

मुसलमान से पूछिये आप क्या जो पिछली उम्मतों पर अज़ाब नाज़िल हुए वह मुसलमानों पर भी नाज़िल हो सकते हैं हालांकि उनसे ज़्यादा गुनाहगार उनसे ज़्यादा बदकार जितने आज मुसलमान गुनाह कर रहे हैं अगर अज़ाब नाज़िल होने वाला होता तो सौ बार हो चुका होता इतनी गुनाहगार उम्मत है इतने बदकार हैं फिर भी मुसलमान मुतमइन है कि हम पर ऐसा अज़ाब नाज़िल नहीं होगा कि जैसा इससे पहले की उम्मतों पर हो चुका, क्या नाज़िल नहीं होगा मुसलमान पुकार कर कहेगा कि इस लिए नाज़िल नहीं होगा कि अल्लाह कुर्आन में वादा कर चुका है कि ऐ रसूल (स॰) मुसलमानों से कह दीजिये कि हम उन पर वह अज़ाब नाज़िल नहीं करेंगे जो इनसे पहले वाली उम्मतों पर हमने अज़ाब नाज़िल किये थे और पूरी–पूरी उम्मतें तबाह हो गईं थीं मिट गयीं थीं क्यों? इसलिए आपका वजूद दरमियान में है। पूरी तवज्जो चाहता हूँ क्योंकि आपका वजूद। यह वादा इलाही है एलान कर दीजिये यह इतमिनान दिला दीजिये कि हम उन पर अज़ाब नाज़िल नहीं करेंगे जैसा पिछली उम्मतों पर नाज़िल हुआ क्योंकि आपका वजूद उनमें है आपकी ज़ात बा बरकत मौजूद है इसलिए आपके वजूद की बरकत की वजह से हम उन पर अज़ाब नाज़िल नहीं करेंगे तो मैं पूछता हूँ मुसलमानों ये तो रसूल (स॰) ज़िन्दगानी का वाक़ेआ है यह एलान हो रहा है आज तुम मुतमइन हो क्योंकि कुर्आनी आयत यह एलान कर रही है कि क्योंकि आपका वजूद मुसलमानों के दरमियान है क्योंकि आप मुसलमानों के दरमियान मौजूद हैं इस वजहसे हम उन पर अज़ाब नाज़िल नहीं करेंगे तो मुझे बताओ कि अब रसूल (स॰) कहाँ मौजूद हैं। तो अब तो मैं मान लूँ कि अज़ाब नाज़िल हो सकता है। नहीं नहीं अज़ाब नाज़िल नहीं होगा इसलिए अगर पहला मुहम्मद (स॰) मौजूद नहीं है तो आख़िरी मुहम्मद मौजूद है। तो अगर न मानो न तसलीम करो तो आयत का कोई फायदा नहीं अब नहीं क्योंकि आप उनके दरमियान में मौजूद हैं इसलिए अज़ाब नाज़िल नहीं करता। तो आज रसूल (स॰) यहाँ मौजूद नहीं तो इसका मतलब यह कि कोई बिलकुल रसूल (स॰) जैसा आज भी मौजूद है कि जिसकी बरकत से अज़ाब से हम महफ़ूज़ हैं।

आप देखें कि हर नबी से इक़रार लिया गया कि देखो हम तुम्हें हिकमत दे रहे हैं किताब दे रहे हैं लेकिन इस शर्त के साथ इस को आयते मीसाक़ कहा जाता है इस शर्त के साथ हम तुमको नुबूव्वत दे रहे हैं इस शर्त के साथ हम यह किताब व हिकमत दे रहे हैं शर्त यह है कि एक आने वाला नबी है जिस पर ईमान लाना होगा अगर उसकी रिसालत का इक़रार करो अगर उस पर ईमान लाओ तो फिर तुमको नुबूव्वत मिलेगी तुमको रिसालत मिलेगी हर नबी ने इक़रार किया कि हम इस आने वाले नबी पर ईमान लाते हैं। तो इसका मतलब है कि हर नबी का उन पर ईमान था। तो हम इस ईमान में सीरते अम्बिया पर अमल कर रहे हैं जिस तरह से उनको एक आने वाले पर ईमान था इसी तरह हमको भी एक आने वाले पर ईमान है। अगर वह एक आने वाले के मुनतज़िर थे तो हम भी एक आने वाले का इन्तिज़ार कर रहे हैं। और उस पर ईमान रखते हैं। फ़र्क़ बस इतना है कि वह अव्वल मुहम्मद (स॰) के मुन्तज़िर थे हम आख़री मुहम्मद (अ॰) के मुन्तज़िर हैं।

(इस्लाम– दीने हक़: मजमूआऐ मजालिस)



इदारा

मुख्य समाचार

इमाम अली नक़ी (अ0) और इमाम हसन असकरी (अ0) के रौज़ों पर हुए हमले के ख़िलाफ

लखनऊ और दिल्ली में अज़ीमुश्शान मुज़ाहरे

लखनऊ। कुछ रोज़ क़ब्ल अमरीकी साज़िश के तहत सामरा में इमाम अली नक़ी (अ.)) और इमाम हसन असकरी (अ.) के रौज़ों पर हुए हमले के ख़िलाफ जुमे की नमाज़ के बाद लखनऊ की एतिहासिक आसफी मस्जिद में क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहिब की क़यादत में ज़बरदस्त मुज़ाहरा हुआ और हज़ारों लोगों की तादाद में एक बड़ा एहतेजाजी जुलूस जामिआ इमामिया तनज़ीमुल मकातिब के बैनर तले बड़े इमामबाड़े से छोटे इमामबाड़े तक गया वहाँ पहुँच कर कुछ दूसरे उलमा ने भी एहतेजाजी तक़रीरें कीं।

अमरीका और इस्राईल के ख़िलाफ एहतेजाजी जुलूस में मोमिनीन के साथ–साथ जामिआ नाज़मिया, जामिआ सुलतानिया व जामिआ इमामिया तनज़ीमुल मकातिब के उस्तादों और तालिबइल्मों ने भरपूर हिस्सा लिया।

क़ाएदे मिल्लत मोलाना कल्बे जवाद साहिब ने वहीं पर यह एलान भी फरमाया कि 19 जून को दिल्ली में अमरीकी दूतावास पर भी मुज़ाहेरा किया जायगा चुनानचे उलमा का एक गरोह क़ाएदे मिल्लत के साथ दिल्ली पहुँचा और अमरीकी दूतावास पर भी मुज़ाहेरा किया वहाँ भी अलहम्दुलिल्लाह हज़ारों की तादाद में अवाम व ख़वास की मिली जुली भीड़ थी। प्रोग्राम की शुरुआत जन्तर मन्तर से हुई जहाँ शीआ व सुन्नी उलमा व खुतबा ने अपनी तक़रीरों में इस्लाम दुश्मन ताक़तों की साज़िशों का ज़िक्र करते हुए अमरीका, बिट्रेन और इस्राईल की मज़म्मत की जिनमें मौलना जलाल हैदर नक़वी दिल्ली, मौलाना मोहसिन नक़वी प्रिंसिपल जामिआ शहीद दिल्ली, मौलाना शफी मोनिस उपाध्यक्ष जमाअते इस्लामी, इस्लाहुद्दीन कीरानवी, डाक्टर ज़फरुल इस्लाम, मौलाना सै0 अली इमामे जुमा दिल्ली, और अल्लामा अक़ीलुल गुरवी साहेबान ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं, जामिआ मनसबिया मेरठ, जामिआ शहीद दिल्ली, हौज़–ए–इल्मिया इमाम हुसैन मुज़फ्फर नगर, और जामिआ सुलतानिया के तालिबाने इल्म भी लायक़े ज़िक्र हैं जिन्होंने एहतेजाजी जुलूस में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। जलसे व जुलूस में अमरीका मुर्दाबाद, और इस्राईल मुर्दाबाद के नारे लग रहे थे।

इस पूरी भीड़ ने अमरीकी दूतावास के सामने काले झण्डों और बैनरों के साथ अपने ग़म व ग़स्से का इज़हार किया।

मौलाना कल्बे जवाद ने कहा कि इराक़ में जहाँ हर तरफ अमरीका की फौज है वहाँ कैसे यह मुमकिन है कि रौज़–ए–अक़दस पर दहशतगर्दाना हमला हो जाए उन्होंने कहा कि यह सब अमरीका की साज़िश के तहत हो रहा है जो इराक़ को शीआ मुसलमानों और सुन्नी अरबों व कुर्द अरबों में तक़सीम करने पर आमादा है।

तक़रीर के आख़िर में क़ाएदे मिल्लत ने फरमाया कि ख़ुदा का शुक्र है कि इस्लाम दुश्मन ताक़तों ख़ासकर अमरीका, बिट्रेन और इस्राईल के ख़िलाफ एहतेजों में मुहतरम चचा डाक्टर मौलाना कल्बे सादिक़ साहिब, मौलाना सफी हैदर साहिब, मौलाना हैदर महदी साहिब और लखनऊ के बेशतर शीआ सुन्नी उलमा और लखनऊ के जामेआत में जामिआ नाज़मिया, जामिआ सुलतानिया और जामिआ इमामिया तनज़ीमुल मकातिब और लखनऊ के बाहर के सभी उलमा व मदारिसे इमामिया और उलमाए अहलेसुन्नत ज़बान व दिल से शरीक थे, हैं और रहेंगे।

इस मौक़े पर एक मेमोरेन्डम अमरीकी दूत को काएदे मिल्लत ने दिया जिसमें मुतालबा किया गया है कि इराक़ से अमरीकी फौजें जल्द से जल्द हटाई जाएँ।

करबला–ए–दयानतुद्दौला लखनऊ में

अज़ीमुश्शान जलसा बयादे ख़ुमैनी (रह0)

लखनऊ। अन्जुमनहाए अज़ा के ज़ेरे एहतेमाम ''यादे इमाम ख़ुमैनी (रह0)'' के उनवान पर कर्बलाए दयानतुद्दौला में एक प्रोग्राम का इन्एक़ाद किया गया जिसमें रहबरे इन्क़ेलाबे इस्लामी आयतुल्लाहिल उज़मा सै0 अली ख़ामेना–ई के नुमाइन्दे जनाब डाक्टर मुहम्मद रज़ा रजब नेजाद मेहमाने ख़ुसूसी की हैसियत से शरीक हुए। प्रोग्राम की सदारत मौलाना सै0 हमीदुल हसन प्रिंसिपल जामिआ नाज़मिया ने की। यह प्रोग्राम आयतुल्लाहिल उज़मा सै0 रूहुल्लाह मूसवी ख़ुमैनी की याद में मुनअक़िद हुआ। आयतुल्लाह ख़ुमैनी ईरान के एक ऐसे वाहिद इस्लामी लीडर थे जिन्होंने ईरान में इस्लामी इन्क़िलाब लाकर ईरान की शहंशाहियत का तख़्ता पलट दिया था और ईरान में फैली हुई बुराईयों को ख़त्म करके इस्लामी हुकूमत क़ायम की।

जलसे का आग़ाज़ तिलावते कलाम पाक से मौलाना हैदर महदी करीमी ने किया और बादे तिलावत कुछ शायारों ने अपना कलाम पेश किया फिर मोलवी क़ायम महदी साहिब और मौलाना जलाल हैदर नक़वी देहलवी ने अपनी–अपनी तक़रीरों में इमाम ख़ुमैनी को ख़िराजे अक़ीदत पेश किया इसके बाद क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहिब ने अपनी तक़रीर में हज़ारों की भीड़ को ख़िताब करते हुए फरमाया कि मुसलमानों को पूरी दुनिया में आपस में लड़ाने की बैनुलअक़वामी साज़िशें की जा रही हैं ताकि मुसलमान कमज़ोर हों। उन्होंने कहा कि इन साज़िशों का लखनऊ मरकज़ बनता जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिस तरह दहशतगर्दों का कोई मज़हब नही होता उसी तरह मुसलमानों को आपस में लड़ाने वालों का भी कोई मज़हब नहीं है चाहे वह नाम का मुसलमान ही क्यों न हों।

मौलाना ने कहा कि हिन्दुस्तान में अज़ादारी को फरोग़ देने में मातमी अन्जुमनों और शायरों का अहम किरदार रहा है। उन्होंने शायरों को मशवरा दिया कि दिल आज़ार शायरी से कोई फायदा नहीं ज़रूरत है कि सिर्फ इमाम हुसैन की क़ुर्बानी के मक़सद को अपनी शायरी से उजागर करें।

प्रोग्राम में मौलाना कल्बे जवाद को उनकी क़ौमी ख़िदमात और मुसलमानों में आपसी भाई चारगी पैदा करने की कोशिशों के सिलसिलें में इत्तेहाद बैनुलमुस्लिमीन एवार्ड से नवाज़ा गया। इसके बाद मेहमाने ख़ुसूसी डाक्टर मुहम्मद रज़ा रजब नेजाद ने अपने मुबारक हाथों से इदारे की जानिब से अन्जुमनों के शायरों को हुसैनी एवार्ड से नवाज़ा। उलमा व ख़ुतबा के अलावा सूबे व शहर के ओहदेदारान भी जलसे में शरीके थे।

आयतुल्लाह फाज़िले लंकरानी की रिहलत

ईरान। ईरान में मरजए तक़लीदे हज़रत आयतुल्लाहिल उज़मा हाज शैख़ मुहम्मद फाज़िल लंकरानी आलल्लाह मक़ामहू ने जो मराज–ए–हफ्तगाना में से एक थे रिहलत फरमाई। आपके मुक़ल्लिदीन की ईरान में अच्छी ख़ासी तादाद है।

हज़ारों दीनी तालिबे इल्म आपके दुरूस व फ़ुयूज़ से फायदा हासिल कर रहे थे। हज़ारों दीनी तलबा व मोमिनों और ज़रूरतमन्दों को शहरिया करोड़ों रुपये में तक़सीम होता था। यह अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम में जानशीनों को ही शरफ़ हासिल रहा है और यह शीआ उलमा का शेवा रहा है।

अल्लामा के जसदे ख़ाकी को 18 जून को हरमे मासूमाए क़ुम में सुपुर्दे लहद कर दिया गया। नमाज़े जनाज़ा बुज़ुर्ग मरजए तक़लीद आयतुल्लाह हुसैन वहीद ख़ुरासानी ने पढ़ाई, जनाज़े में हज़ारों उलमा व अवाम ने शिरकत की। पूरा शहर क़ुम काले झण्डों से एलाने सोगवारी कर रहा था। इल्मी आसार में उनकी सैकड़ों किताबें मौजूद हैं। ऐसे आलिमे जलील की रिहलत से जो जगह ख़ाली हुई है उसका पुर होना मुश्किल है। इदारा इमामे ज़माना और तमामी फ़ुक़हा व उलमा की ख़िदमत में ताज़ियत पेश करते हुए मोमिनीन से फातेहा ख़्वानी की दरख़्वास्त करता है।